फ
२०२

फ
६

फ
२०२

गुप्त गोदना

गुप्तगोदना

। उपन्यास ।

(पहिला हिस्सा)

पहिला बयान ।

सन्ध्या होने में कुछ विलम्ब नहीं है, नियमानुसार पूरब तरफ से उमड़कर क्रमश: घिर आनेवाली अंधियारी ने अस्त होते हुए सूर्य्य भगवान की किर्णों द्वारा आकाश के पश्चमीय खंड में फैली हुई लालिमा पर अपनी स्याह चादर का पर्दा बढ़ाना आरम्भ कर दिया है। समय पर बलवान होकर विजय पताका लिये हुए शीघ्रता से बढ़ती हुई अपनी सहायक अंधियारी और उसके डर से अपनी हुकूमत छोड़कर भागी जाती हुई शत्रु लालिमा की विकल अवस्था देख दो एक बलवान तारे मन्द मन्द हंसते हुए आकाश में दिखाई देने लगे हैं। जाड़े के दिनों में कलेजा दहलानेवाली ठंढी ठंढी हवा आज जंगली फूलों

की महक से सोंधी हुई अठखेलियों के साथ मन्द मन्द चलकर खुशदिल और नौजवानों की तबीयत में गुदगुदी पैदा कर रही है। बरसात में उमंग के साथ बढ़कर दोनों किनारों पर लगी हुए सायदार पेड़ों को गिराकर भी संतोष न पाने वाली पहाड़ी नदी आज किसी की जुदाई में दुबली भई हुई बड़े बड़े ढोकों से सर टकराती सिथिलता के कारन डगमगा कर चलती हुई भी प्रेमियों के हृदय को प्रफुल्लित कर रही है। चारा चुगने के लिये सवेरा होने के साथही उड़कर दूर दूर की खबर लाने वाली खूबसूरत चिड़ियाएं घिरी आने वाली अंधियारी के डर से लौट कर कोमल कोमल पत्तों की आड़ में अपने अपने घोसलों के बाहर बल्कि चारो तरफ फुदक फुदक कर मनभावन शब्दों से चुहचुहा रही हैं। ऐसे समय में एक खुशरू, खुशदिल, खुश-पोशाक और नौजवान मुसाफिर चौकन्ना होकर इधर उधर देखता एक पत्ते के भी खड़खड़ाने से चौंकता हुआ इस तरह चारो तरफ घूम रहा है जैसे कोई शिकारी कब्जे में आकर नि-कल गये हुए शिकार की खोज में फिर फिर कर टोह लगाता हो। जिस जंगल में यह नौजवान घूम रहा है पहाड़ी नदी ने बीच में पड़कर उसके दो हिस्से कर दिये हैं। पूरब वाले हिस्से में तो बहुतही भयानक और घना जंगल है मगर पश्चिम हिस्से वाला जंगल बहुत घना नहीं है जिसमें हमारा नौजवान घूम रहा है। नौजवान की उम्र लगभग पच्चीस वर्ष की होगी, चेहरा खूबसूरत, हाथ पैर गठीले, पोशाक अमीराना मगर शिकारियों और सवारों के ढंग की थी, तलवार कमर से लटकती हुई और नेजा हाथ में लिये हुए था। जिस घोड़े पर वह यहांतक आया था वह थोड़ी

ही दूर पर एक पेड़ के साथ बागडोर के सहारे बंधा हुआ था। और उससे थोड़ीही दूर पर एक जखमी हरिन जमीन पर वेदम दिखाई देरहा है॥

कुछ देर तक इधर उधर घूमने के बाद उस नौजवान ने अपनी जेब में से सोने की एक सीटी निकाली और उसे मुंह में लगा कर जोर से बजाया और ध्यान देकर सुनने लगा कि कहीं से किसी तरह की आवाज आती है या नहीं, मगर दोही चार पल के बाद उसी तरह के सीटी की आवाज बाईं तरफ वाले जंगल में से आई जो बहुत घना और नदी के उस पार अर्थात् पूरब की तरफ था। अब निश्चय होगया कि वह नौजवान अपने किसी साथी को खोज रहा था मगर जब उसने अपनी सीटी का जवाब पाया तो प्रसन्न होकर यह कहता हुआ उसी तरफ रवाना हुआ कि "व्यर्थ इतना समय रविदत्त की खोज में नष्ट किया! पहिलेही सीटी बजाता तो अबतक पता लग गया होता"॥

इस समय पहाड़ी नदी का पाट पन्द्रह बीस हाथ से ज्यादे न होगा अस्तु नौजवान बहुत जल्द उस नदी के पार उतर गया और सीटी की आवाज पर ध्यान देता हुआ एक घने पेड़ के नीचे जा पहुंचा और "रविदत्त" को, जिसकी खोज में घूम रहा था उस पेड़ के नीचे बेहोश पड़े हुए देख कर चौंक पड़ा॥

रविदत्त हमारे नौजवान नायक उदयसिंह का सच्चा दोस्त था, इस समय उदयसिंह की उम्र बीस बर्ष की थी और रविदत्त की उम्र के धागे में तीस गांठे पड़ चुकी थीं। रविदत्त की शादी हो चुकी थी मगर उदयसिंह अभी तक कुंआरा था, ये दोनों दोस्त शिकार की धुन में घूमते हुए यहां तक पहुंच कर अलग

होगये थे, अब जो उदयसिंह ने अपने दोस्त को इस तरह बद हवास जमीन पर पड़े हुए देखा उसे बड़ाही ताज्जुब हुआ और वह घबड़ा कर उसके पास जा बैठा। दो दफे पुकारने और हिलाने पर भी जब जवाब न पाया तो नब्ज पर हाथ रक्खा, नब्ज बहुत सुस्त और दबी हुई चल रही थी। उदयसिंह को शक हुआ कि यह घोड़े पर से गिर पड़ा है और ज्यादे चोट लग जाने के कारन बेहोश होगया है। क्योंकि रविदत्त का घोड़ा भी वहां दिखाई न देता था मगर जीनपोश जमीन पर गिरा हुआ था॥

"सर और मुंह पर पानी पड़नेही से इसकी बेहोशी जाती रहेगी" यह सोच कर उदयसिंह नदी की तरफ बढ़ा जो वहां से लगभग दो सौ कदम की दूर होगी, जब नदी के किनारे पहुंचा अपनी कमर से चादर खोल कर खूब तर किया और तेजी के साथ चलता हुआ फिर उसी जगह पहुंचा जहां रविदत्त बेहोश पड़ा हुआ था। बड़े आश्चर्य की बात है कि इस दफे उसने रविदत्त को उस पेड़ के नीचे न देखा और उसके बदले में एक बहुतही हसीन और नौजवान औरत पर नजर पड़ी जो रविदत्त की तरह जमीन के ऊपर बेहोश पड़ी हुई थी। उसका चेहरा बहुतही सुन्दर और सुडौल था, बड़ी २ आंखें पलक के अन्दर छिपी हुई थीं। छोटे छोटे और पतले होठों पर पान की सुर्खी चढ़ी हुई थी। चौड़ी पेशानी सिन्दूर से ख़ाली थी और नुकीले नाक में बेशकीमत मोतियों वाली एक नथ थी जिसकी गोलाई में इस वक्त फर्क पड़ा हुआ था, अर्थात वह नथ कई जगहों से टेढी होगई थी और उसका गूंज खुला हुआ था। गले

में कंठा और सकरी, हाथों में सोने के कड़े और स्याह चूड़ियां तथा नाजुक उंगलियों में जड़ाऊ छल्ले इस बात को प्रगट कर रहे थे कि यह लड़की साधारन नहीं है बल्कि अमीर खानदान की है। उसकी उम्र चौदह वर्ष से ज्यादे न होगी, लड़कपन ने यद्यपि अभी तक उसका साथ न छोड़ा था मगर नौजवानी के हर कारे ने उसे अपनी जगह छोड़ देने का हुक्म सुना दिया था। उसकी बदन में साढ़ी के अतिरिक्त, मोटे कपड़े की एक चुस्त कुरती थी और उसके गहरी जेब में आठ अंगुल लांबा और बहुत खूब सूरत एक दुनाली तमंचा मौजूद था जिसका जड़ाऊ मुठ कुछ बाहर निकला हुआ था और जिस पर उदयसिंह की ताज्जुब भरी निगाहें पड़ रही थीं॥

हमारा किस्सा सन् १०६८ हिजरी से शुरू होता है, यह वह जमाना था जब हिन्दोस्तान का नामी बादशाह शाहजहां कड़ी बीमारी का शिकार होकर महल के अन्दर पड़ा हुआ था, उसके मरने की झूठी खबरें चारो तरफ मशहूर होरही थीं, उसके चारो लड़के* दाराशिकोह, सुजाअ, औरगंजेब और मुराद बख्स

---

* शाहजहां ने अपने चारो लड़कों को इस ख्याल से कि झगड़ने न पावें अलग अलग मुल्कों की हुकूमत देकर जुदा कर दिया था। बड़े लड़के दाराशिकोह को मुलतान और काबुल की हुकूमत दे दी थी उससे छोटे शुजाअ को बंगाले का हाकिम किया था, उससे छोटे औरङ्गजेब को दक्खिन का मुल्क सौंपा था और सबसे छोटे लड़के मुराद को गुजरात का मालिक बना दिया था मगर दाराशिकोह अपने बाप के पासही रहा करता था॥

तख्तसलतन पर कब्जा करने की नीयत से तरह २ की चाल बाजियां कर रहे थे, बंगाल की तरफ से शुजाअ ने चढ़ाई कर दी थी और उसे रोकने की नीयत से दाराशिकोह (जो आगरेहो में रहा करता था) का लड़का सुलेमां शिकोह बहुत सी फौज लेकर रवाना हो चुका था, दक्खिन की तरफ से अपने छोटे भाई मुरादबख्स को तख्त की लालच में अन्धा करके साथ लिये हुए औरङ्गजेब ने चढाई की थी और उन्हें रोकने के लिये बहुतसी फौज लेकर कासिमखां और जसवन्तसिंह उज्जैन में चिप्रानदी के किनारे जा पहुंचे थे जहां नदी के पार औरङ्गजेब का लश्कर पड़ा हुआ था॥

हमारा नौजवान उदयसिंह अपने दोस्त की जगह उस औ-रत को देख कर बहुतही हैरान हुआ, उसने सोचा कि उज्जैन यहां से थोड़ीही दूर पर है, चिप्रानदी के दोनों किनारों पर औरङ्गजेब और दाराशिकोह की बेअन्दाज फौज का डेरा पड़ा हुआ है, ताज्जुब नहीं कि इस औरत को उन फौजी सिपाहियों के हाथ से कुछ तकलीफ पहुंची हो या उनके खौफ से इसे यहां तक आने की नौबत आई हो! मगर रविदत्त के गायब होने का सबब कुछ समझ में नहीं आता॥

धीरे धीरे रात होजाने के कारन चारो तरफ अंधकार छा गया, उस हसीन औरत की सूरत शक्ल भी जो थोड़ीहो देर प-हिले साफ दिखाई देरही थी अब बखूबी दिखाई नहीं देती यद्यपि उस औरत की मुहब्बत ने उदयसिंह के दिल में अपनी जगह करली थी मगर वह उस मुहब्बत को अपने दिल से दूर करदेने का उद्योग करने लगा जोकि उसकी सामर्थ से बिल्कुल

ही बाहर था हां अपने दोस्त रविदत्त की खोज से वह किसी तरह मुंह नहीं मोड़ सकता था परन्तु ऐसे भयानक जंगल में रात्री के समय एक ऐसे आदमी का पता लगाना कठिनही नहीं बल्कि असंभव था जो एक दफे आंखों के सामने पड़ कर पुनः अन्तरध्यान होगया हो ॥

उदयसिंह उसी जगह खड़ा खड़ा तरह तरह की बातें सोच रहा था कि सामने से कई आदमियों के आने की आहट पा कर चौंक पड़ा और उनकी तरफ देखने लगा जिनके तेजी के साथ चलने के कारण जंगली पेड़ों से जुदा भए हुए सूखे पत्ते चरमर कर रहे थे और जिनके साथ कई मशालें भी थीं ॥

थोड़ीही देर में और पास आने पर मालूम हुआ कि वेलोग जो चाल और पोशाक तथा हर्बों के लेहाज से फौजी सिपाही जान पड़ते थे गिनती में बीस पचीस से कम न होंगे। पहिले तो उदयसिंह के दिल में यह आया कि ऐसे समय में यहां से टल जानाही उचित होगा जब वेलोग आगे निकल जायँगे तो जैसा होगा देखा जायगा, परन्तु साथही इसके यह भी बिचार किया कि यदि मैं यहां से हट जाऊंगा और वेलोग इस औरत के पास पहुंच जायँगे तो ताज्जुब नहीं कि इसे लावारिस समझ के इसके साथ किसी तरह की बेअदबीका वर्ताव करें और यदि मैं यहां मौजूद रहूंगा तो कह सुन कर उनके हाथों से इसे बचाऊंगा। आखिर पिछले बिचार पर उदयसिंह से ज्यादे जोर दिया और उस औरत के पास ज्यों का त्यों खड़ा रहा ॥

जब वे फौजी सिपाही उदयसिंह के पास आ पहुंचे तो उनकी निगाह उदयसिंह और उस बेहोश औरत पर पड़ी और सबके

सब उसी जगह खड़े होगये। उन सिपाहियों में एक सिपाही सबका सर्दार था और उसकी पोशाक भी बनिस्बत औरों के ज्यादे भड़कीली थी। यद्यपि उस सर्दार की तथा औरों की भी निगाह उदयसिंह पर पड़ी परन्तु किसी ने भी उनसे किसी तरह का सवाल न किया और न उनकी तरफ ध्यान दिया, ऐसी अवस्था में उदयसिंह को स्वयं कुछ पीछे हट जाना पड़ा। सर्दार ने अपने सिपाहियों की तरफ देखके कहा "बिना डोली या पालकी के इन्हें उठा कर लेजाना ठीक न होगा"॥

एक०। यदि होश आजाय तो बेहतर है॥

सर्दार०। तौभी क्या होगा? क्या पैदल जा सकेंगी?

दूसरा०। खैर जो हुक्म हो किया जाय॥

सर्दार०। (कुछ सोच कर) इसका होश में न आनाही अच्छा है, तलवार से पेड़ की छोटी छोटी डालियां काटो और दो तीन आदमियों की चादर लेकर झोली तैयार करो॥

सर्दार की आज्ञा पाकर कई सिपाहियों ने बहुत अच्छा कहा और झोली तैयार करने की फिक्र करने लगे। उदयसिंह इतनी देर तक चुपचाप खड़ा रहा मगर अब उससे चुप न रहा गया, उसने सर्दार के पास जाकर पूछा॥

उदयसिंह०। आप किस लश्कर या फौज से सम्बन्ध रखते हैं और इन्हें (औरत की तरफ इशारा करके) कहां लेजायँगे?

सर्दार०। मैं तुम्हारी बातों का जवाब न देनाही अच्छा समझता हूं मगर इतना कह देना जरूर है कि तुम यहां से चुपचाप चले जाओ नहीं तो तुम्हारे हक में बेहतर न होगा॥

उदय०। मगर बड़े अफसोस की बात है कि आपलोग

सिपाही आदमी होकर एक सिपाही की बात का जवाब नहीं देते ॥

सर्दार०। मगर क्या तुम इस बात को नहीं जानते कि यहां वालों के लिये आज कल का समय कैसा है ?

उदय०। मैं खूब जानता हूं कि आज कल फौजी कानून का बर्ताव बड़ी सख्ती से हो रहा है ?

सर्दार०। तिस पर भी मैंने तुमसे यह नहीं पूछा कि कौन और कहां के रहने वाले हो क्या यह थोड़ी बात है ॥

इतना कह कर सर्दार ने बड़े गौर से उदयसिंह की तरफ देखा और कुछ पीछे हट गया, उदयसिंह भी उसके पास चला गया और कुछ पूछा चाहताही था कि सर्दार ने धीरे से कहा "अगर मेरा तजर्बा मुझे धोखा नहीं देता तो मैं कह सकता हूं कि तुम होनहार और बहादुर आदमी मालूम पड़ते हो तथा रुपे पैसे की भी तुम्हें कमी नहीं है, अगर यह बात ठीक है तो तुम अपने सच्चेपनका हमें परिचय दो और इस बेचारी की कुछ मदद करो मैं स्वाधीन न होने के कारण लाचार हूं परन्तु क्या करूं दया मेरा पीछा नहीं छोड़ती यद्यपि मैं ऐसे आदमी का नमक खारहा हूं जिसमें दया का लेश मात्र नहीं है (हाथ पकड़ कर और धीरे से) क्या तुम्हारा नाम उदयसिंह तो नहीं है ?

उदय०। (ताज्जुब में आकर) बेशक मेरा यही नाम है मगर तुम मुझे कैसे जानते हो ? मैंने तो तुम्हें कभी देखा नहीं ॥

सर्दार०। मैं तुम्हें बहुत दिनों से जानता हूं कई लड़ाइयों में मेरा और तुम्हारे पिता का साथ रहा है वह बड़े बहादुर आ-

२

दमी हैं, मैं इस समय तुम से विशेष बात नहीं कर सकता क्यों कि मेरे आदमियों को शक हो जायगा मगर इतना जरूर कहता जाऊंगा कि यदि तुम भी अपने बापकी तरह बहादुर हो तो औरङ्गजेब के लश्कर में आकर मुझसे मिलो मगर भेष बदल कर आना और अपना नाम रामसिंह रखना ॥

उदय०। बहुत अच्छा मगर तुम्हारा पता किस नाम से लगाऊंगा।

सर्दार०। मेरा नाम भरथसिंह है, बस अब किनारे हो जाओ और इस समय हम लोगों का पीछा न करो

इतना कह कर वह सर्दार अपनी मंडली में जामिला और उदयसिंह के देखतेही देखते उस औरत को उठवा कर लेगया

दूसरा बयान ।

उस सर्दार और सिपाहियों के चले जाने बाद उदयसिंह को फिर अपने मित्र रविदत्त की फिक्र पड़ी और दोस्त का पता न लगने के कारन जो बेचैनी पैदा हुई थी वह बढ़ने लगी ॥

यद्यपि चारो तरफ अन्धकार छाया हुआ था और जंगल के घने पेड़ों की बदौलत उसे और भी सहायता मिल रही थी मगर उदयसिंह ने अपने मित्र की खोज में किसी तरह की सुस्ती न की और इधर उधर घूम २ कर खोज लगाताही रहा। यकायक पत्तों की खड़खड़ाहट से उसे मालूम हुआ कि दाहिनी तरफ से दो एक आदमी आ रहे हैं। उदयसिंह एक पेड़ की आड़ देकर खड़ा होगया और थोड़ीही देर में धीरे २ बातें करते हुए

वे दोनों आदमी उसके पास आ पहुंचे और कुछ देर के लिये उसी जगह खड़े होगये जहां से सात या आठ हाथ की दूरी पर पेड़ की आड़ में उदयसिंह खड़ा था। रात और सन्नाटे का समय था इस लिये उन दोनों की बातें सुनने का उदयसिंह को अच्छा मौका मिला उन दोनों में यों बातचीत होने लगी॥

एक०। अच्छा हुआ जो वे लोग उस औरत को उठाकर ले गये, अगर रविदत्त उसे देखलेता तो जरूर पहिचान जाता॥

दूसरा०। इसी लिये तो ऐसा प्रबन्ध किया गया था। मैं तो रविदत्त को देख कर एक दम चौंक पड़ा और समझा कि अब मामला बिगड़ गया मगर तुमने अच्छी चलाकी खेली॥

पहिला०। मेरी तो यही राय थी कि रविदत्त को मारकर बखेड़ाही ते कर दिया जाय मगर तुमने न माना॥

दूसरा०। तुम तो बड़ेही दुष्ट हो! जरा से काम के लिये किसी को मार डालना क्या अच्छी बात है?

पहिला०। अजी समय पर सब कुछ किया जाता है॥

दूसरा०। तो उसे छोड़ देने में तुम्हारी हानि क्या हुई? बल्कि हम लोग वेफिक्र रहे। यदि वह मार डाला जाता तो उदयसिंह उसके खूनी का पता लगाए बिना कभी न रहता और अब तो किसी को कुछ गुमान भी न होगा यहां तक कि स्वयं रविदत्तही को किसी तरह का शक न होगा॥

पहिला०। तुम जो चाहो सो कहो मगर मैं तो अपनी उसी राय को पसन्द करता हूं। खूनी का पता लग जाना क्या हँसी खेल है? तिसपर आज कल की लड़ाई के समय में! हजारों आदमियों पर उदयसिंह का शक जाता और हम लोगों का तो

ध्यान भी उसके दिल में न आता। अब भी मैं यही राय देता हूं कि रविदत्त को मार कर बखेड़ा तै करो मुझे शक है कि वह जान बूझ कर बेहोश बना हुआ था, ईश्वर न करे कहीं यह गुमान सच निकला तो बड़ी मुशकिल होगी, रविदत्त बड़ाही क्रोधी आदमी है और हमारे तुम्हारे ऐसे चार के लिये वह अकेलाही काफी है॥

दूसरा०। बात तो ठीक है मगर.........

पहिला०। मगर तगर काहे को ? मैं जो कहता हूं उसे मानो और लौट चलो, रविदत्त का जीते रहना ठीक नहीं॥

दूसरा०। अजी रहने भी दो! उधर उदयसिंह उसकी खोज में घूम रहा होगा मिल जायगा तो सभी काम चौपट हो जायगा जो होगया सो होगया चलो आगे का रास्ता लो॥

पहिला०। ठहरो अपने साथी को तो आलेने दो वह कहां कहां भटकता फिरेगा ? हां मुझे एक बात और याद आई, जिस समय हम लोग रविदत्त को उठाने लगे थे उस समय उसने जरासी आंख खोलदी थी और फिर जल्दी से बन्द करली, मालूम होता है कि हम लोगों को पहिचान कर उसने नखरा किया।

दूसरा०। अगर यह बात तुम सच कहते हो तो बेशक खौफ का मुकाम है॥

पहिला०। मैं तुम्हारेही सरकी कसम खाकर कहता हूं तुम से कदापि झूठ न बोलूंगा, इसके सिवाय उसके बगल में.........

यहांपर की कुछ बातें उदयसिंह को अच्छी तरह सुनाई नहीं पड़ीं॥

दूसरा०। खैर जो तुम कहो करने के लिये मैं तैयार हूं ?

पहिला०। तो बस लौट चलो और उसे मार कर बखेड़ा निबटाओ, यहां से कुछ बहुत दूर तो है नहीं और अभी वह भी बेहोश पड़ा होगा॥

पहिला०। अच्छा चलो जो कुछ होगा देखा जायगा॥

दोनों आदमी यहां से हटकर पीछे की तरफ लौट चले और कदम दबाते हुए उदयसिंह भी उनके पीछे २ रवाना हुए। इन दोनों की बातों से उदयसिंह को अपने मित्र का पता लग गया और यह भी मालूम होगया कि तमाम फसाद इन्हीं दोनों आदमियों का है मगर उन दोनों की बातों से यह नहीं मालूम हुआ कि ये लोग रविदत्त को कहां छोड़ आए हैं॥

उदयसिंह को एक बात का खौफ और भी मालूम हुआ वह सोचने लगा कि "कहीं ऐसा न हो हम रविदत्त की टोह में इन दोनों के पीछे २ चले जाने की धुन में रहें और ये दोनों उसके पास पहुंच कर एकही वार में उसका काम तमाम करदें आखिर ये दोनो आगे २ तो जाही रहे हैं"॥

उदयसिंह का यह सोचना निसन्देह वाजिब था और इस विचार ने उसे चौंका भी दिया, उसने पीछे २ जाना पसन्द न किया और उन दोनों को रोकने का मौका ढूंढ़ने लगा। थोड़ी दूर और आगे जाकर छोटासा मैदान मिला। यहां की जमीन उसर होने के कारन पेड़ पत्तों से खाली थी, उदयसिंह को अपने खयाल से यह अच्छा मौका मिला, झपट कर उन दोनों के पास जा पहुंचा और तलवार खैंच कर सामने खड़ा होगया और बोला तुम दोनों कौन हो?

उन दोनों ने भी तलवार खैंचली और एक ने अकड़ के कहा

"हम लोग बादशाह के सिपाही हैं, तुम कौन हो जो यहां अके 'ले घूम रहे हो ? जल्द जवाब दो नहीं तो गिरफ़ार करके बाद-शाह के हुजूर में ले चलेंगे ॥

उदय० । अब इस नखरे और धमकी को तो तह कर रक्खो यह बताओ कि रविदत्त को कहां रख आए हो ॥

एक० । रविदत्त कौन ?

उदय० । बहाना करने से कोई फायदा न निकलेगा समझ-लो कि मेरा नाम उदयसिंह है और मैंने तुम्हारी सब बातें छिप कर सुनली हैं ॥

दूसरा० (अपने साथी से कुछ कांपती हुई आवाज में)अजी यह वही उदयसिंह है जिसे हम लोग बड़ी देर से खोज रहे हैं, इसी को गिरफ़ार करने के लिये बादशाह ने हुक्म दिया है (उद-य से) बस तलवार जमीन पर रख दो और चुपचाप हमारे साथ चले चलो ॥

इतना सुनतेही उदयसिंह को क्रोध चढ़ आया उसने तेजी से एक के ऊपर तलवार का वार किया जिसे दूसरे ने बड़ी फुर्ती से रोका मगर उदयसिंह की दूसरी वार को रोक न सका और कंधे पर गहरा घाव खाजाने के कारन त्योराकर जमीन पर गिर पड़ा, उसी समय उदयसिंह ने दूसरे की खबर ली । उदयसिंह दिलावर और बहादुर आदमी था, तलवार चलाने की विद्या अच्छा जानता था इस लिये बातकी बात में उस आदमी को भी नीचा दिखाया अर्थात दूसरे को भी जमीन पर गिरा दिया ॥

उदयसिंह को मालूम होगया कि ये दोनों ऐसे नहीं गिरे हैं कि उठ कर भाग जायँ या किसी का पीछा करें इस लिये

बेधड़क एक के पास चला गया और बोला "अब भी बतादो कि रविदत्त कहां है नहीं तो तुम्हारा सर काट डालूंगा" इसका जवाब उसने कुछ भी न दिया और अपने को ऐसा बना लिया मानो उसमें बोलने की ताकतही नहीं है, दूसरे ने भी अपने को ऐसाही दर्साया॥

उदयसिंह ने सोचा कि अब इनके ऊपर तलवार का वार करना उचित नहीं है और इन्हें यहां पर इसी तरह छोड़ कर रविदत्त की खोज में इधर उधर भटकना भी मुनासिब नहीं जान पड़ता। यह तो मालूम होही चुका है कि रविदत्त यहां से थोड़ीही दूर पर या कहीं पासही बेहोश पड़ा हुआ है और सिवाय इन दोनों के और कोई उसे दुःख देने वाला भी नहीं है साथही इसके इस अंधेरी रात में और ऐसे घने जंगल में रविदत्त का पता लगजाना कठिनही नहीं असंभव है, इससे यही बेहतर है कि इन दोनों के पासही थोड़ी दूर पर बैठ रहें, आखिर थोड़ी देर में रविदत्त की बेहोशी दूरही होगी उस समय मेरी सीटी की आवाज सुनकर वह आपही यहां आ जायगा। अगर इन दोनों को छोड़ कर उसे ढूंढने जाता हूं तो ताज्जुब नहीं मेरे पीछे ये दोनों सम्हल बैठें और मुझ से पहिलेही रविदत्त के पास पहुंच कर उसे मार डालें, क्योंकि मैं तो बेअन्दाज इधर उधर खोजूंगा और ये दोनों झट उसके पास जा पहुंचेंगे॥

इत्यादि बहुत सी बातें सोच कर उदयसिंह ने वहां से चले जाना उचित न जाना और उन दोनों जख्मियों से थोड़ी दूर पर जमीन पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद उदयसिंह ने जेब से सीटी निकाल कर बजाई और तुरतही उसका जवाब भी पाया॥

उदयसिंह को विश्वास होगया कि उसकी सीटी का जवाब

रविदत्तही ने दिया और वह हमारी तरफ आताही होगा मगर यह बात न थी। मुरादबख्श की फौज के कुछ सिपाही किसी काम के लिये इस रास्ते से कहीं जा रहे थे जो सीटी की आवाज सुन कर रुक गये। उन सभों के पास भी बजाने वाली सीटी थी जिसे एक ने अपनी जेब से निकाल कर उदयसिंह को सीटी का जवाब दिया था॥

सीटी का जवाब पाकर उदयसिंह ने पुन: सीटी बजाई और थोड़ीही देर बाद अपने चारो तरफ पन्द्रह या बीस फौजी सिपाहियों को मौजूद पाया। उन सभों के पास चोर लालटैन मौजूद थी और उसमें रोशनी होरही थी। एक ने लालटैन का मुंह खोल कर उदयसिंह के चेहरे पर रोशनी की और उसे बड़े गौर से देख कर पूछा "तुम कौन हो?" इसी बीच में दूसरे की लालटेन ने सभों को बता दिया कि यहां दो जख्मी भी पड़े हुए हैं। ऐसी अवस्था देख कर सभों ने अपने लालटैन की रोशनी खोलदी और दोनों जख्मियों को तथा उदयसिंह को अच्छी तरह देखा। वे लोग उदयसिंह को पहिचानते न थे मगर उनकी पौशाक ने उदयसिंह को बता दिया कि ये मुसल्मानी फौज के सिपाही हैं॥

लालटैनों की रोशनी होजाने से उदयसिंह को उत्कंठा हुई कि वह उनदोनों की सूरत देखे जो उसके हाथ से जख्मी होकर पृथ्वी की शरन ले चुके थे। फौजी सिपाही की बातों के जवाब में केवल इतनाही कह कर कि "ठहरिये मैं आपको सब कुछ कहता हूं" उदयसिंह दोनों जख्मियों की तरफ बढ़ गया और लालटैन की रोशनी में उनके चेहरे को अच्छी तरह देखा। देखतेही उदयसिंह चौंका और घबड़ा कर बोल उठा "आह! यह तो हमारा भाई है !!"

तीसरा बयान।

फौजी सिपाहियों ने जो कुछ यहां पर देखा उनकी उत्कंठा बढ़ाने के लिये काफी था। पहिले तो उदयसिंह को देख कर उन्हें ताज्जुब हुआ! फिर जब और दो आदमियों को जख्मी पाया तो खयाल हुआ कि इसी (उदय) ने इन दोनों को मारा है, मगर जब उदयसिंह ने जख्मी को देख कर ताज्जुब के साथ कहा कि "आह! यह तो हमारा भाई है!!" तब उन लोगों के आश्चर्य का कोई हद न रहा!

उन सिपाहियों में से एक ने जिसका नाम हमीदखां था और उन सभों का अफसर था उदयसिंह से पूछा "आप कौन हैं?"

उदय०। मैं यहां से बहुत दूर का रहने वाला हूं, शिकार की लालच में यहां तक चला आया॥

हमीद०। आज कल शिकार की लालच में यहां आना ताज्जुब पैदा करता है! क्या आप नहीं जानते कि छिप्रा नदी के दोनों किनारों पर किस किस की फौज पड़ी हुई है और किस तरह की लड़ाई होने वाली है?

उदय०। मैं जानता हूं, अगर रास्ता भूल न जाता तो इस तरफ कदापि न आता॥

हमीद०। खैर, मगर इन दोनों को किस ने जख्मी किया?

उदय०। मैंने॥

हमीद०। (ताज्जुब से) आपने!!

उदय०। हां॥

हमीद०। आप अभी कह चुके हैं कि "यह तो हमारा भाई है" फिर आप ने अपने भाई को क्यों मारा?

उदय०। इसने इस अँधेरी रात में मेरे साथ दुश्मनी की थी और अपने को जाहिर नहीं किया था इसी से मुझे धोखा हुआ॥

हमीद०। अब आप इसके साथ कैसा बर्ताव करेंगे ?

उदय०। सो इस से बातचीत किये बिना मैं नहीं कह सकता॥

हमीद०। (कुछ सोच कर) आप जसवंतसिंह को जानते हैं ?

उदय०। ऐसे बहादुर और राजा के दामाद को कौन नहीं जानता होगा ? खास करके आज कल के जमाने में जब कि बादशाह (शाहजहां) ने उन्हें औरङ्गजेब के मुकाबले में भेजा है और चिप्रा के उस पार उनका डेरा पड़ा हुआ है॥

हमीद०। और कासिम खां को भी आप जानते ही होंगे॥

उदय०। बेशक ! मगर आप के इस सवाल का मतलब क्या है ?

हमीद०। कुछ नहीं योंहीं पूछता हूं, हां आप का नाम तो मैंने पूछा ही नहीं !

इसका जवाब देना उदयसिंह को कठिन हो गया क्योंकि उदयसिंह को उस औरत के लिये औरङ्गजेब के लश्कर में जाना जरूर था और भरतसिंह ने कह दिया था कि "वहां तुम भेष बदल कर जाना तथा अपना नाम रामसिंह बताना" अब उदयसिंह ने सोचा कि अगर इन लोगों से मैं अपना नाम उदयसिंह बताता हूं तो शायद उस समय कुछ बुराई पैदा हो जबकि औरङ्गजेब की लश्कर में इससे मुलाकात हो और अगर मैं इसी समय अपना नाम रामसिंह रखता हूं तो यह जख्मी भाई तुरत मुझे झूठा ठहरा कर मेरा असल नाम जाहिर कर देगा, उस समय ये लोग मेरे दुश्मन हो जायँगे, अस्तु उदयसिंह सिर नीचा करके सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये?

हमीद०। आप चुप क्यों होगये क्या नाम बताने में कुछ हर्ज है ? या आप अपने को छिपाया चाहते हैं ?

उदय०। न तो नाम बतानेही में कोई हर्ज है और न मैं अपने को छिपाया ही चाहता हूं मतलब यह है कि हम लोग अपने मुंह से अपना नाम नहीं ले सकते हां यदि आप को मेरा नाम सुनना जरूर हो तो, कागज पर लिख कर बता सकता हूं॥

हमीद०। अब इस जगह कागज कलम दावात कहां से आ सकता है ? खैर आप जमीन पर उँगली से निशान करके बताईये मैं पढ़ लूंगा॥

उदयसिंह ने अपना नाम 'रामसिंह' लिख दिया जिसे पढ़ने के साथ ही हमीद खां ने सलाम करके कहा "अच्छा तो मुझे रुखसत कीजिये यदि कुछ सिपाहियों की आवश्यकता हो तो कहिये आपकी मदद के लियें छोड़ जाऊं ?

उदयसिंह ने कहा "मुझे किसी की भी जरूरत नहीं है" और यह सुन हमीद खां ने अपने साथियों में से एक की तरफ देख कर कहा "अच्छा अब हमलोग लश्कर में जाते हैं तुम पता लगाओ कि उस बेहोश नौजवान को उठा लेजाने वाले कौन थे ?"

उदय०। क्या इस जंगल में से किसी को.........

हमीद०। जी हां जब हमलोग इधर आ रहे थे तब रास्ते में पेड़ की आड़ में एक बेहोश आदमी को पड़े देखा, लालटेन की रोशनी जब उसके चेहरे पर डाली गई तो मालूम हुआ कि यह कोई अच्छे खानदान का और सिपाही आदमी है, मैंने बड़े गौर से उसकी सूरत देखी और चाहा कि उसे होश में ला

कर हालचाल दरियाफ़ करने का बन्दोबस्त किया जाय मगर उसी समय बहुत से सिपाहियों के आने की आहट मालूम हुई और हमलोगों को रोशनी बन्द करके आड़ में हो जाना पड़ा इसलिये कि हम को केवल जासूसी का काम सौंपा गया है दुश्मनों के सामने प्रगट होने या उनसे लड़ने की आज्ञा नहीं है और उन सिपाहियों पर दुश्मन होने का गुमान था तथा वे गिनती में भी ज्यादे मालूम पड़ते थे॥

उदय०। मगर यहां हमारे पास तो आप बहुत जल्द और खुल्लमखुल्ला चले आये!

हमीद०। सिर्फ सीटी की आवाज सुन कर। फिर भी एक आदमी को आगे भेज कर दरियाफ़ कर लिया था कि यहां कितने आदमी हैं?

उदय०। अच्छा तो उस आदमी की सूरत शक्ल कैसी थी और उम्र क्या होगी?

हमीद०। उम्र तो अट्ठाईस या तीस वर्ष से ज्यादे न होगी, रंग कुछ सांवला, चेहरा गोल, नाक चिपटी, ठुड्डी पर एक जख्म था जिस पर पट्टी लगी हुई थी और दाहिनी आंख के ऊपर एक बड़ा सा मसा था तथा.........

उदय०। अस्तु। अच्छा तो उन लोगों ने वहां पहुंच कर क्या किया?

हमीद०। वे लोग जवान को हाथों हाथ उठा कर (हाथ का इशारा करके) इसी तरफ़ ले गये॥

उदय०। कितनी देर हुई होगी?

हमीद०। अभी आधी घड़ी भी न हुई होगी, हमारा आ-

दमी बहुत जल्द उनके पास पहुंच कर पता लगा लेगा अच्छा तो अब मैं बिदा होता हूं ॥

इतना कहने बाद हमीदखां ने सलाम करके उत्तर तरफ का रास्ता लिया ॥

उस बेहोश नौजवान का जो कुछ हुलिया हमीदखां ने बयान किया था उससे हमारे उदयसिंह को निश्चय होगया कि वह अवश्य उसका दोस्त रविदत्त था, अस्तु इससे तो निश्चिन्ती होगई कि ये दोनों बेईमान उसे किसी तरह की तकलीफ पहुंचा सकें मगर फिर भी गैर के पंजे में फँस जाने से खुटका बना हो रहा। उदयसिंह को सबसे ज्यादे आश्चर्य इस बात का था कि जब से उसने हमीदखां से अपना नाम रामसिंह बताया तब से हमीदखां की बातचीत का ढंग बिल्कुल ही बदल गया, हमीदखां ने उसके साथ इज्जत और मेहरबानी का बर्ताव किया बल्कि कभी कभी तो यह मालूम होता था कि हमीदखां अपने को छोटा और कम दर्जे का आदमी समझ के बातचीत करता है। यद्यपि पहिले तो उदयसिंह ने कई बातों का खयाल करके रुकावट के साथ बातचीत की थी मगर जब देखा कि हमीदखां सभ्यता और इज्जत का बर्ताव करता है तब यह समझ कर कि शायद रामसिंह के नाम में कोई गुन हो और इस गुन को नष्ट न करना चाहिये दिल खोल कर बातें कीं और ऐसा करना उदयसिंह के लिये बहुत मुनासिब था ॥

वे दोनों शैतान जिन्हें उदयसिंह ने जख्मी किया था उसी जगह पड़े पड़े सब बातें सुन रहे थे और शायद कुछ देख भी रहे थे। हम नहीं कह सकते कि उदयसिंह और हमीदखां की

बातों का असर उन दोनों पर क्या पड़ा। उदयसिंह बहुत देर तक उन दोनों के पास खड़ा सोचता रहा अन्त, में धीरे धीरे यह कहता हुआ वहां से रवाना हो गया कि "खैर देखा जायगा पहिचान तो लिया ही है॥

अब इस समय उदयसिंह को दो बातों की फिक्र रही, एक तो औरङ्गजेब के लश्कर में जाकर भरतसिंह से मिलना और उस औरत का भेद मालूम करना, दूसरे अपने दोस्त रविदत्त क पता लगाना॥

उदयसिंह को यह तो मालूम हो ही गया था कि कई आदमी रविदत्त को फलानी तरफ ले गये हैं अस्तु दोनों जख्मियों को उसी तरह छोड़ पहिले रविदत्त की फीक में रवाना हुआ॥

रात पहर भर से कम बाकी थी और चन्द्रदेव भी अपने अनूठे स्थान से बाहर निकल कर इधर उधर झांकने लग गये थे। उदयसिंह अपने खयालों में डुबा हुआ आध कोस से ज्यादे दूर न गया होगा कि पीछे से एक आदमी ने आकर उसके मोंढे पर हाथ रक्खा और उदयसिंह ने चौंक कर उसकी तरफ देखा। उस आदमी का तमाम बदन स्याह कपड़े से ढका हुआ था और चेहरे पर स्याह नकाब पड़ी हुई थी॥

उदय०। (तलवार के कब्जे पर हाथ रख कर) तुम कौन हो?

नकाबपोश०। एक मामूली आदमी॥

उदय०। हम से क्या चाहते हो?

नकाबपोश०। कुछ भी नहीं॥

उदय०। फिर हमारे पास आकर हमें होशियार करने का सबब क्या है?

नकाबपोश०। मैं केवल इतना ही कहने के लिये आया हूं कि यदि तुम अपने दोस्त रविदत्त से मिलना चाहते हो तो मैं उससे मुलाकात करा सकता हूं या तुम्हें उसकेपास तक पहुंचा सकता हूं॥

उदय० कौन रविदत्त ?

नकाबपोश०। जिसकी खोज में तुम परेशान हो रहे हो ?

उदय०। मैं तो किसी रविदत्त को नहीं खोजता शायद तुम्हें धोखा हुआ हो और तुम किसी और को खोज में हो!

नकाबपोश०। (जोर से हँस कर) बहुत खासे! मुझे कई बातों में धोखा ही धोखा हो कर रह गया! हां ठीक, बहुत अच्छा। वह आदमी कोई दूसरा ही होगा जिसने अपने दोस्त के दो दुश्मनों को जख्मी करके जमीन पर गिरा दिया था औरवह कोई और ही होगा जिसनेएक फौजी अफसर से बेहोश रविदत्त का हुलिया पूछा था! खैर मुझे इससे क्या मतलब ? मैं क्यों जोर देकर तुम्हें कहूं कि चलके रविदत्त से मिलो और उसकी सहायता करो ? जाओ आनन्द करो मैं भी सलाम करता हूं॥

इतना कह कर नकाबपोश पीछे को तरफ लौटा और दो ही चार कदम गया था कि उदयसिंह ने कुछ सोच कर उसे पुकारा और कहा "सुनो सुनो भागे क्यों जाते हो ?"

नकाबपोश०। जब तुमसे और रविदत्त से कोई वास्ता ही नहीं और तुम उदयसिंह होही नहीं तो हम क्यों अपना काम हर्ज करके तुम्हारे पास खड़े रहें ?

उदय०। अच्छा चच्छा बताओ रविदत्त कहां है ?

नकाबपोश०। (जोर से हँस कर) क्या सहजही में कह दिया कि "बताओ रविदत्त कहां है ?" अजी मैं जो इस भया-

नक जंगल में दौड़ता हुआ तुम्हारे पास आया हूं आखिर, इसका भी कोई सबब है या नहीं ?

उदय० । सो तो तुम ही कह सकते हो ?

नकाबपोश० । नहीं नहीं, सो तो तुम ही कह सकते हो कि रविदत्त का पता लगा देने के बदले में तुम मुझे क्या दोगे ?

उदय० । इस समय जो कुछ कीमती चीज मेरे पास है वह सब तुम्हारे हवाले कर दूंगा ॥

नकाबपोश० । इसके अतिरिक्त और कुछ भी देना होगा ?

उदय० । इस समय और मैं क्या दे सकता हूं ?

नकाबपोश० । इस समय नहीं तो समय मिलने पर दे सकते हो । मैं इस समय उसके बदले में एक हुंडी लिख देना ही काफी समझूंगा ॥

उदय० । हां इस बात को मैं मंजूर करता हूं ॥

नकाबपोश० । अच्छा तो इस पत्थर की चट्टान पर बैठ जाओ मेरे नौकर को आ लेने दो ॥

उदय० । बहुत अच्छा मैं बैठता हूं ॥

इतना कह कर उदयसिंह बैठ गये और उन्हीं के पास वह नकाबपोश भी बैठ गया । थोड़ी देर तक उदयसिंह के मतलब की बातें कह कर नकाबपोश ने समय बिताया और इसके बाद उदयसिंह को मालूम हुआ कि यह हमारी भलाई करने नहीं आया था जबकि पन्द्रह बीस आदमियों ने वहां पहुंच कर उन्हें चारो तरफ से घेर लिया और नकाबपोश ने कहा "अब आप ढाल तलवार जमीन पर रख दीजिये ॥
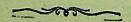
चौथा बयान।

यद्यपि उदयसिंह नकाबपोश के फंदे में फँस गया और उसे कई आदमियों ने आकर चारो तरफ से घेर लिया मगर उदयसिंह डर कर बदहवास नहीं हुआ और न उसने हिम्मत हारी, क्योंकि वह बहादुर था और लड़ाई के फन में अपने को अनूठा समझता था। नकाबपोश के इस कहने पर कि "अब आप ढाल तलवार जमीन पर रख दीजिये" उदयसिंह उठ खड़ा हुआ और नेजा सम्हाल कर बोला "क्या इन थोड़े से नामर्दों से डर कर मैं ढाल तलवार रख दूंगा?"

इस समय चन्द्रमां की रोशनी बखूबी फैल चुकी थी और इस जगह जंगली पेड़ भी बहुत कम थे जिससे उदयसिंह को लड़ाई में बहुत कुछ सुबीता हो सकता था। उदयसिंह ने खड़े हो कर नेजा घुमाना शुरू किया और ललकार कर कहा "जिसको मेरे मुकाबिले में आना हो आवे और देखे कि मुझमें क्या करामात है"॥

उस नकाबपोश ने, जिसने उदयसिंह को धोखा दिया था अपने आदमियों को ललकार कर कहा "हां देखना जाने न पावे जिस तरह हो सके जीता ही गिरफ्तार कर लो"॥

उदयसिंह नेजा चलाने में बहुत ही तेज और होशियार था, यद्यपि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए तीन आदमियों ने एक साथ उसपर हमला किया मगर उदय का कुछ भी न बिगड़ा, बल्कि उदयसिंह के नेजे की चोट खा कर एक दुश्मन जमीन पर गिर पड़ा और उस समय सभों ने एक साथ ही उदयसिंह पर हमला कर दिया॥

उदयसिंह ने अपने दिल में निश्चय कर लिया था कि "वह नकाबपोश जिसने उसको धोखा दिया था इन सभों का सर्दार है इसलिये जहां तक होसके पहिले उसी को बेकाम करना चाहिये" साथही इसके उदयसिंह को यह भी बहुत जल्द मालूम होगया कि वह नकाबपोश अपने को सामना करने से बचाता है और अपने साथियों के पीछेही रह कर काम निकाला चाहता है, तथापि उदयसिंह ने अपने विचार में किसी तरह की कमी न होने दी और नकाबपोश के पास पहुंचने की धुन में लगा ही रहा॥

थोड़ीही देर में उदयसिंह ने अपने नेजे से तीन आदमियों को बेकाम करके जमीन पर गिरा दिया और उसी समय उसे नकाबपोश के पास जा पहुंचने का भी मौका मिल गया। जब नकाबपोश और उदयसिंह का सामना होगया तो उदयसिंह ने नकाबपोश को छाती में एक नेजा ऐसा मारा कि वह पीठ की हड्डी फोड़ कर पार निकल गया और नकाबपोश बेदम हो कर जमीन पर गिर पड़ा॥

नकाबपोश के गिरतेही उसके मददगारों की हिम्मत टूट गई और वे मैदान खाली छोड़ कर भाग गये। उदयसिंह ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और नकाबपोश का चेहरा खोल कर उसकी सूरत पर गौर करने लगा जो इस समय दम तोड़ रहा था। यद्यपि चन्द्रमा की रोशनी उसके चेहरे पर बखूबी पड़रही थी मगर उदयसिंह उसे किसी तरह भी पहिचान न सका और यह कह कर पीछे हट गया कि "मैंने इसे आजके पहिले कभी नहीं देखा"॥

इस लड़ाई में यद्यपि उदयसिंह ने फतह पाई मगर उसके बदन पर भी कई जख्म लग चुके थे जिनमें से बहुत ज्यादे खून

निकल जाने के कारण उसके सर में चक्कर सा आने लग गया। यह सोच कर कि "यहां ठहरने से पुन: किसी दुश्मन से मुकाबिला न हो जाय" उदयसिंह ने अपने को सम्हाला और वहां से तुरत एक तरफ को रवाना हो गया, परन्तु उसमें ज्यादे दूर तक जाने की ताकत न थी इसलिये थोड़ी दूर जाकर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और फिर लेटने के साथ ही बेहोश हो गया॥

पांचवां बयान

दूसरे दिन पहर भर दिन चढ़ने के बाद जब उदयसिंह होश में आया तो अपने पास अपने मित्र रविदत्त को बैठे पाया और यह भी देखा कि उसके (उदय के) जख्मों पर गीली पट्टी बँधी हुई है॥

उदयसिंह चौंक कर उठ बैठा और अपने मित्र की तरफ देख कर बोला "हैं!! तुम यहां कैसे आ पहुंचे? यह आशा तो बिलकुल न थी कि तुमसे इतनी जल्द मुलाकात होगी!

रविदत्त०। बात भी ऐसी ही थी, मैं स्वयं आपके दर्शन की आशा से हाथ धो बैठा था, मगर धन्यवाद है उस सर्वशक्तिमान जगदीश्वर को जिसने आशा के विरुद्ध एक अनूठे ढंग से मुझे बचा लिया और पुन: आपसे मिलने का मौका दिया॥

उदय०। कहो तो सही तुम किस मुसीबत में गिरफ्तार हो गये थे और क्योंकर यहां तक पहुंचे?

रविदत्त०। मैं अपना हाल बयान करने के पहिले आपका

हाल सुनूंगा, मगर इस जगह न तो मैं कुछ सुनने के लिये तैयार हूं और न कुछ कहने के लिये॥

उदय०। बेशक हम लोगों को यहां अटक न रहना चाहिये, मगर अब तो दिन का समय है॥

रविदत्त०। क्या हुआ अगर दिन का समय है तो। मालूम होता है आपको अपने दुश्मनों का हाल कुछ मालूम नहीं हुआ।

उदय०। क्यों नहीं मालूम हुआ? मैं उन दोनों को बखूबी जान गया जिन्हों ने तुम्हे धोखा दिया था॥

रविदत्त०। उन्हें तो मैं भी जानता हूं, वही मुलेठी वाले न!

उदय०। हां हां वेही॥

रविदत्त०। मैं खूब जान गया हूं मगर इस जगह न तो कुछ कहूंगा और न कुछ सुनूंगा, आप में यदि चलने की ताकत है तो उठिये या नहीं तो कहिये मैं कोई सवारी का बन्दोबस्त करूं॥

उदय०। मैं बखूबी चल सकता हूं मगर यह बताओ कि तुम मुझे कितनी दूर और कहां ले जाओगे?

रविदत्त०। बस मैं आध कोस से ज्यादे दूर चलने की आप को तकलीफ न दूंगा॥

दोनों मित्र वहां से उठ खड़े हुए और आधे घंटे तक सफर करने के बाद एक ऐसे स्थान में पहुंचे जहां घना जंगल और जानवरों का भय रहने के कारण आदमियों का आना जाना बहुत कम हो सकता था। उस जगह एक पुराने और टूटे हुए मकान का कुछ हिस्सा बचा हुआ मौजूद था। उदयसिंह को साथ लिये हुए रविदत्त उसी टूटे मकान (या खँडहर) के अन्दर घुस गया जिस में इस समय भी दो कोठड़ियां मजबूत और रहने

योग्य बची हुई थीं और उस खँडहर के पास ही से एक पानी का नाला पश्चिम से आकर पूरब तरफ बहता हुआ चला गया था॥

दोनों मित्रों को मामूली कामों से छुट्टी पाने और आराम का बन्दोबस्त करने में दो घंटे से कुछ ज्यादे बीत गये और इसके बाद एक साफ जगह पर बैठ कर यों बातचीत करने लगे—

उदय०। हां तो तुम हम से जुदा होकर कहां गये और क्या हुआ?

रविदत्त०। सो नहीं, पहिले आप अपना हाल कह जाइये तब मेरा हाल सुनिये॥

उदय०। ऐसा ही सही (अपना हाल खुलासा कहने के बाद) अच्छा अब तुम कहो॥

रविदत्त०। आप की बातों से मालूम होता है कि हम दोनों आदमी इसी जँगल में एक दूसरे को खोजते और देर तक भटकते रहे। मैं जब आप को खोज में घूमता घूमता थक गया तो एक पेड़ के नीचे जीनपोश बिछा कर बैठ गया और देर तक सोचता रहा कि अब क्या करना चाहिये! इसी बीच में एक औरत के चिल्लाने की आवाज मेरे कान में आई और वह आवाज ऐसी दर्दनाक थी कि जिसे सुन कर मैं बेचैन होगया और तुरत उठ कर उसी तरफ रवाना हुआ जिधर से आवाज आई थी। थोड़ी ही देर में पहुंच कर देखा कि एक पेड़ के नीचे नेहायत हसीन और खूबसूरत औरत पड़ी है, उसकी आंखें बन्द थीं और होंठ कुछ कुछ हिल रहे थे, मानो कुछ कह रही थी। मैं अपना कान उसके मुंह के पास लेगया और जो कुछ सुना वह बड़ी ही ताज्जुब की बात थी! धीरे धीरे उसके मुंह से ये शब्द मैंने सुने "कौन

कहेगा.........गोविन्ददेव क उदयसिंह ने मेरो जान ली.........
चालाक औरङ्गजेब का.........फिर भी उदय की याद.........वही
.........उसी की याद.........हाय प्यारा उदय............

उदयसिंह०। (ताज्जुब से कुछ बेचैन हो कर) बेशक ताज्जुब की बात तुमने सुनी ! उसकी सूरत शक्ल कैसी थी ?

रविदत्त० । बेशक वही औरत थी जिसे आप ने देखा था। जब मैंने देखा था तब भी वह दुनाली तमंचा उसकी जेब में मौजूद था ॥

उदय० । (आश्चर्य से) वही औरत थी ?

रवीदत्त० । बेशक वही थी। आपने उसकी गर्दन में एक मसा भी शायद देखा.........

उदय०। (बात काट कर) हां हां, बेशक वही थी वह मसा तो मुझे कभी न भूलेगा। अच्छा तब क्या हुआ ?

रविदत्त० । उसके बाद फिर कोई आवाज उसके मुंह से न निकली और मुझे वह बेहोश होगई सी जान पड़ी। मैंने सोचा कि यदि इसके चेहरे पर जल का छींटा दिया जाय तो कदाचित होश आजाय। आखिर इसी खयाल से जल लाने के लिये मैं नदी की तरफ गया और अपना पटूका तर करके ले आया, मगर अफसोस ! कि लौट कर मैंने उस औरत को वहां न पाया। मुझे बड़ा ही ताज्जुब हुआ और मैं उसकी खोज में चारों तरफ घूमने लगा। उसी समय आपके सीटी की आवाज मैंने सुनी और सीटी ही में उसका जवाब देकर मैं आपकी तरफ रवाना हुआ और थोड़ी ही दूर गया था कि यकायक फिर उसी औरत पर निगाह पड़ी जो कि सब्ज घास के ऊपर पड़ी हुई थी ॥

मैं विश्वास नहीं दिला सकता कि यह वही औरत थी, क्योंकि उसका तमाम बदन सुफ़ेद चादर से ढका था, केवल एक हाथ और एक पैर का कुछ हिस्सा खुला हुआ था। मगर हाथों में वही सोने के कड़े और स्याह चूड़ियां तथा उँगलियों में जड़ाउ छल्ले देखने से मुझे निश्चय हो गया कि वही औरत है और यह देखने के लिये कि "कहीं यह मर तो नहीं गई! या मारी तो नहीं गई जो उसके ऊपर सुपेद चादर डाल दी गई है" मैं आपकी तरफ़ जाने का खयाल छोड़ उसी की तरफ़ बढ़ा और बैठे बठाए आफ़त की टोकड़ी सर पर उठाली॥

जब वह औरत मुझ से केवल छ: सात हाथ की दूरी पर रह गई और मैं उसके पास पहुंचाही चाहता था कि घास से ढकी हुई पोली जमीन पर पैर पड़ा और मैं एक गड्हे के अन्दर चला गया॥

शिकारी लोग जानवरों को फँसाने के लिये जिस तरह गड्हा खोद कर ऊपर से घांस फूंस बिछा के उसका मुंह बन्द कर देते हैं, ठीक वैसाही मामला यहां पर भी था। उस गड्हे का मुंह इस तरह घांस फूल से ढका हुआ था कि मुझे कुछ भी मालूम न हुआ और मैं उसके अन्दर चला गया, इसके अतिरिक्त सन्ध्या का समय भी था और कुछ अन्धकार सा भी हो रहा था।

मैं यह नहीं कह सकता कि वह गड्हा तैयार किया गया था या पहिले ही का बना हुआ था, मगर उसके नीचे की मिट्टी कड़ी थी और मैं मुंह के बल गिरा भी था इस लिये मुझे चोट ज्यादे लगी और मैं बेहोश होगया। उसके बाद क्या हुआ इसको खबर मुझे कुछ भी नहीं, हां जब मुझे कई आदमी वहां से

उठा कर दूसरी जगह ले गये तब मुझे कुछ होश आया और जरासी आंख खोल कर मैंने अपने दुश्मन को पहिचान लिया मगर कई बातों को खयाल करके फिर उसी तरह आंखें बन्द कर लीं। उसी समय मेरे दुश्मनों में से एक ने कहा "वही कपड़ा फिर इसके मुंह पर रख दो और चलें चलो" बस मेरे मुंह पर एक गीला रूमाल रख दिया गया जिसमें किसी तरह की तेज महक बेहोशी पैदा करने वाली थी और मैं पुन: बेहोश हो गया इसके बाद दीन दुनियां की खबर कुछ भी न रही ॥

उदय०। आखिर वे लोग कौन थे जो तुम्हें वहां से उठा कर ले गये ?

रविदत्त०। वे हमारे सिपाही लोग थे जो पीछे छूट गये थें और हमलोगों को खोजते हुए इत्तफाक से वहां पहुंचे थे। उन्हीं की बदौलत मेरी जान बची और वेही लोग मुझे उठा कर इस खँडहर में ले आए थे ॥

उदय०। अगर वे लोग आ मिले थे तो उस समय जब मैं होश में आया तो तुम अकेले क्यों नजर पड़े और अब वे लोग कहां हैं?

रविदत्त०। मैं उन लोगों के साथ ही आपको खोजने के लिये निकला था और जब आप बेहोशी की हालत में मिल गये तब मैंने उन लोगों को कई काम सपुर्द करके इधर उधर भेज दिया। कई तो छिप कर हम लोगों की हिफाजत कर रहे हैं और कई औरङ्गजेब के लश्कर में गये हैं और दो तीन आसामी दुश्मनों को ढूंढ रहे हैं। इस खँडहर के आसपास भी एक दो आदमी जरूर होंगे। उस औरत के मुंह से आपका नाम सुन कर मुझे उसका पता लगाना आवश्यक होगया, मगर अब तो आप की

जुबानी मालूम हो होगया कि वह औरङ्गजेब के लश्कर में गई है और शायद आप भी रामसिंह बन कर वहां जावेंहींगे॥

उदय०। जाऊंगा मगर एक बात का खयाल और भी........

उदयसिंह अपनी बात पूरी करने भी न पाए थे कि कई आदमी हाथ में नंगी तलवार लिये हुए खंडहर के अन्दर आते दिखाई पड़े॥

छठवां बयान।

गरमी के दिनों में मुसाफिरों को रात का सफर कुछ अच्छा मालूम पड़ता है, तिसपर यदि रात चांदनी हो और चित्त के अनुकूल सवारी हो तो फिर कहना ही क्या है! मगर सफर ऐसे रास्ते से होना चाहिये जहां डाकुओं का डर, लुटेरों का खौफ और बदमाशों का खयाल न हो। आज यद्यपि चन्द्रदेव के दर्शन आधी रात के बाद होंगे परन्तु बेचारे टुटपुंजिये तारे, यह समझ कर कि थोड़ी ही देर में हमारी चमक दमक के साथ ही साथ कदर और रौनक भी जाती रहेगी, अपनी रोशनी से दिल खोल कर मुसाफिरों और राह चलतों को फायदा पहुंचा रहे हैं। इस समय जिस आगरे से दिल्ली जाने वाली सड़क पर हम अपने पाठकों को ले चलते हैं वह आजकल के तरह की पक्की सड़कों का मुकाबिला करने वाली तो नहीं मगर पुराने जमाने की कच्ची सड़कों में अच्छी समझे जाने लायक थी। उसके दोनों तरफ बड़े बड़े मैदान (चौर) थे जिनमें बरसाती पानी

भरे रहने के कारण मौसिम में धान की खेती के सिवाय कोसों तक और कुछ भी दिखाई नहीं देता था परन्तु आज उन में एक पत्ती भी न होने के कारण विचित्र सन्नाटा छाया हुआ है। यह जमाना भी (आज कल की तरह) "सोना उछालते जाने" की कहावत पूरी करने वाला नहीं वल्कि "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत पैदा करने वाला था। अच्छे अच्छे जमींदार डाकुओं के मेली बने हुए थे और लूट के माल के साथही साथ गरीब मुसाफिरों को दुःख पहुंचाने में भी एक भारी हिस्सा लेते थे॥

इसी सड़क पर हम एक पालकी, जिसपर जरबफ़ का पर्दा पड़ा हुआ था और जिसे बानाती पौशाक पहिरे हुए बत्तीस कहारों के अतिरिक्त दस बारह फौजी सवार अपनी हिफाजत में लिये हुए थे, तेजी के साथ दिल्ली की तरफ जाते हुए देख रहे हैं॥

इसी तरह बहुत दूर तक सफर करने बाद थक कर कहारों ने एक जगह पालकी रख दी और दम लेने लगे। उस समय हिफाजत करने वाले सवारों में से एक सवार जो कम उम्र और हर तरह से सभों का सर्दार मालूम होता था, घोड़े से उतर कर उस पालकी के पास गया और जरा सा पर्दा उठा कर बोला "किसी चीज की जरूरत है?" इसके जवाब में पालकी के अन्दर से एक नाजुक सी बारीक आवाज आई "नहीं किसी चीज की जरूरत तो नहीं है मगर सुनो तो सही"॥

निसन्देह इस पालकी के अन्दर एक कमसिन और खूबसूरत औरत थी मगर इस अँधेरी रात में बिना अच्छी तरह देखे भाले हम उसकी खूबसूरती का बयान इस जगह नहीं कर सकते

केवल उन दोनों को बातचीत लिख कर छोड़ देना उचित समझते हैं। उस औरत को यह बात कि "मगर सुनो तो सही" सुन कर उस नौजवान ने पालकी का पर्दा उठाया और कहा ' कहो क्या कहती हो ?"

औरत०। क्या अभी कोई गांव या कसबा हम लोगों को नहीं मिलेगा ?

नौजवान०। मिलेगा क्यों नहीं मगर इस तरफ तो बड़ी दूर दूर पर गांव मिलता है। चलते चलते तबीयत घबड़ा गई, कहार लोग भी परेशान हो रहे हैं॥

औरत०। तबीयत क्या घबड़ा गई मेरा तो डर के मारे दम निकला जाता है, घड़ी रात गये से इस समय तक हम लोग बराबर दौड़ादौड़ चले आ रहे हैं मगर अभी तक बस्ती या आबादी की बू तक नहीं मिली। किसी से पूछो तो सही॥

नौजवान०। पूछें किससे कोई आदमी भी तो नहीं दिखाई देता॥

औरत०। क्या इन कहारों में से कोई भी नहीं जानता कि गांव कब और कहां मिलेगा ?

नौजवान०। कहारों से मैं पूछ चुका हूं उन बेचारों को इस तरफ की कुछ भी खबर नहीं है॥

औरत०। कहीं आग की रोशनी या उजाला भी किसी तरफ दिखाई नहीं देता ?

नौजवान०। कहीं नहीं, चारों तरफ सन्नाटा मालूम पड़ता है, बस्ती का निशान बताने वाले कुत्तों के भौंकने की भी आवाज सुनाई नहीं देती॥

औरत०। है है !! तब कैसे बनेगा ? इस तरफ के डाकुओं का हाल सुन सुन कर पहिले ही से मैं अधमुई हो रही थी अब तो और भी...............

नौजवान०। नहीं कोई चिन्ता की बात नहीं है हम लोग अकेले दुकेले तो हैं नहीं कि यकायक जिस का जो चाहेगा आ कर लूट लेगा, इसके अलावे हम लोगों के पास और हर्बे तो हई हैं बन्दूकें भी भरी हुई तैयार हैं कोई तुम्हारी पालकी के पास फटकने तो पावे होगा नहीं॥

औरत०। अजी मुझे कुछ अपनी ही फ़िक्र थोड़ी है तुम्हारी जान भी तो प्यारी है, तो यहां सन्नाटे मैदान में खड़े क्यों हो रहे हो ?

नौजवान०। यहां दो कारणों से रुक जाना पड़ा, एक तो पालकी के कहार बहुत थक गये हैं, दूसरे आगे का रास्ता कुछ ज्यादे खराब और पथरीला मिलता जाता है इससे हम चाहते हैं कि चन्द्रमा निकल आवे तो आगे बढ़ें॥

औरत०। हां यह बात तो ठीक है, चन्द्रमा निकल आवेगा तो दूर का आदमी भी दिखाई देगा, मगर चन्द्रमा कब निकलेगा।

नौजवान०। अब निकला ही चाहता है, देखो वह सामने की तरफ आसमान पर उजाला फैल रहा है॥

इतने ही में एक तरफ से कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आई और उसी तरफ़ आग की रोशनी भी देख कर वह औरत बोली।

औरत०। देखो वह आग चमक रही है और उसी तरफ से कुत्ते के भौंकने की आवाज भी आती है वहां पर जरूर कोई गांव या बस्ती है॥

नौजवान०। हां हैं तो सही॥

औरत०। तो फिर उसी तरफ क्यों नहीं चले चलते?

नौजवान०। बिना समझे बूझे सड़क छोड़ के मैदान की तरफ खेत ही खेत जाना मुनासिब नहीं है, कौन ठिकाना वहां जाकर हम लोगों को आबादी की सूरत दिखाई न पड़े और केवल किसी खेत अगोरने वाले की झोपड़ी ही देख कर अफसोस करना पड़े॥

औरत०। इस सामने की तरफ खेत में कुछ लगा तो है नहीं इसी तरह दोनों तरफ मैदान ही मैदान है, तब अगोरने वाले ऐसी जगह रह कर क्या करेंगे? वहां जरूर कोई गांव होगा॥

नौजवान०। अगर तुम्हारा कहना ठीक हो तौ भी हम सड़क छोड़ कर उस तरफ जाना मुनासिब नहीं समझते॥

औरत०। मैं इस बारे में जोर नहीं दे सकती जैसा मुनासिब समझो करो, अगर रात इसी जगह बिताने का इरादा है तो इसी जगह पालकी के पास ही कुछ बिछा कर आराम से बैठो मेरा भी जी लगा रहेगा॥

नौजवान०। हां ऐसाही करते हैं॥

इतना कह कर नौजवान ने पालकी का पर्दा छोड़ दिया और खड़े हो कर एक कहार से अपने घोड़े का जीनपोश लाने के लिये कहा, जब कहार जीनपोश ले आया तो नौजवान ने उसे पालकी के पास जमीन पर बिछा दिया और पर्दे का एक हिस्सा उठा कर पालकी के ऊपर फेंक दिया, मौका देख कर कहार लोग पालकी के दूसरी तरफ हट गये और पुनः उन दोनों में यों बातचीत होने लगी—

औरत०। क्या तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि हम लोगों को अब कितनी दूर जाने के बाद आराम मिलेगा॥

नौजवान०। हां इतना तो कह हम सकते हैं कि अगर बादशाह की तरफ से हम लोगों का पीछा न किया गया तो पच्चीस कोस का सफर और करने के बाद हम लोग एक ऐसे ठिकाने पर जा पहुंचेंगे जहां वर्षों आराम के साथ रहें और किसी को कानोंकान खबर न हो॥

औरत०। बादशाह का तो हम लोगों ने कुछ बिगाड़ा नहीं फिर उनकी तरफ से हम लोगों का पीछा क्यों किया जायगा?

नौजवान०। हां हम लोगों ने तो कुछ बिगाड़ा नहीं है मगर उदयसिंह की तरफ से बादशाह का दिल साफ नहीं है, उन्हें किसी ने विश्वास दिला दिया है कि "उदयसिंह औरंगजेब का तरफदार है और...............

नौजवान अपनी बात पूरी भी न करने पाया था कि यकायक घोड़े के टापों की आवाज सुन कर चौंक पड़ा और बोला "कोई सवार आता है"॥

औरत०। कोई डाकू या लुटेरों के साथियों में से न हो?

नौजवान०। डाकुओं और लुटेरों के साथियों में से अगर होता तो अकेला न होता और यह सवार, जहां तक टापों की आवाज से मालूम होता है अकेला ही जान पड़ता है, देखो दम भर में मालूम ही हो जायगा, अगर डाकुओं के साथियों में से होगा तो हम उसे साथियों को खबर करने के लिये लौट कर जाने न देंगे॥

इतना कह कर नौजवान उठ खड़ा हुआ, पालकी का पर्दा

गिरा दिया और जीनपोश उठाए हुए पालकी के दूसरी तरफ आकर खड़ा होगया। एक कहार ने उसके हाथ से जीनपोश लेकर उसके घोड़े की पीठ पर डाल दिया और सबकोई उस सवार के आने का इन्तजार करने लगे॥

थोड़ी ही देर में वह सवार भी वहां आ पहुंचा और सभों को अच्छी तरह देख भाल कर घोड़े से नीचे उतर पड़ा। एक सवार ने उससे पूछा "तुम कौन हो?"

इसके जवाब में सवार ने कहा "पहिले यह बताओ कि सर्कार कहां हैं?" हमारे नौजवान ने उसकी आवाज पहिचान ली और उसे अपने पास बुलाकर कहा "कहो प्रतापसिंह! तुम कैसे आए?"

प्रताप०। मैं आपको इस बातकी इत्तला देने आया हूं कि आप लोगों के भागने की खबर बादशाह के कानों तक पहुंच गई और उसने आप लोगों की गिरफ़्तारी का हुक्म दे दिया है, अस्तु अब उचित है कि आप लोग सड़क ही सड़क जाने का खयाल छोड़ के जंगल और मैदान का रास्ता लीजिये और जिस तरह हो सके अपने को जुल्म के पंजे से बचाइये॥

नौजवान०। खैर कोई चिन्ता नहीं, जब ईश्वर हमारा निगहबान है और हम ईश्वर की तरफ से निर्दोष हैं तो हमारा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता मगर तुमने बहुत ही अच्छा और बड़े हिम्मत का काम किया कि इस बातकी इत्तला करने यहां तक चले आए इससे हम लोगों को बहुत फायदा पहुंचेगा॥

प्रताप०। मैं क्यों न आता? ऐसी खबर सुन कर भी मुझ से कब रुका जाता था? उदयसिंहजी का नमक ऐसा नहीं है जिसे

में इस जन्म में भुला दूं और उसके प्यारों की इज्जत और हुर्मत का खयाल न करूं॥

नौजवान०। शाबाश शाबाश! अब जो कुछ तुम्हारी राय होगी वही किया जायगा। हां यह बताओ कि अब तुम लौट जाओगे या...............

प्रताप०। मैं अब आप लोगों का साथ छोड़ कर कहीं नहीं जा सकता। कहारों को हुक्म दीजिये कि पालकी उठावें और सड़क के नीचे उतर चलें॥

यद्यपि पालकी के अन्दर बैठी हुई वह बेचारी कमसिन औरत प्रताप की सब बातें सुन रही थी तथापि नौजवान ने उस के पास जाकर सब हाल कहा और दिलासा देकर प्रताप के पास चला आया। हुक्म पाकर कहारों ने पालकी उठाई, नौ-जवान घोड़े पर सवार होगया। पालकी सड़क के नीचे उतर कर खेत ही खेत रवाना हुई और सब हिफाजत करने वाले उसे घेर कर जाने लगे। इस समय चन्द्रदेव उदय होकर मुसाफिरों को अपनी रोशनी या चांदनी से मदद पहुंचाने लग गये थे॥

सातवां बयान।

सड़क से उतर कर सवारी पुनः तेजी के साथ रवाना हुई। अब चन्द्रमा की रौशनी चारो तरफ बखूबी फैल चुकी थी इस लिए कहारों को खेत ही खेत चलने में भी विशेष तकलीफ नहीं होती थी। हमारा नौजवान और प्रतापसिंह दोनों साथ ही साथ घोड़ा मिलाए जा रहे थे और उन दोनों में यों बातचीत होती थी—

नौजवान०। पादशाह को यह खबर कैसे लग गई?

प्रताप०। आजकल खबर लगना कौन बड़ी बात है? चारो तरफ की चढ़ाई के कारण दाराशिकोह को नींद तो आती नहीं, जब देखो तब जासूसों का बाजार गरम रहता है। इनाम पाने की उम्मीद में चारो तरफ से लोग तरह तरह की खबरें लाकर उसे पहुंचाया करते हैं और इस बात का कुछ भी खयाल नहीं करते कि "झूठ सच क्या है धर्म और अधर्म किसे कहते हैं? बुरों के साथ ही साथ भलों को भी पीस डालना कैसी बुरी बात है?" इत्यादि सभी बातों को छोड़ झूठी सच्ची खबरें पहुंचा कर हाथ रंगना लोगों का काम ही रहा है, एक तो स्वयं दाराशिकोह की अक्लमन्दी का हाल आप को मालूम ही है, तिस पर आज कल के मामले ने तो उसे यहां तक चौकन्ना कर दिया है कि वह बैठे बैठे हवा से भी इधर उधर की खबरें पूछा करता है, किसी ने उसे यह भी कह दिया है कि उदयसिंह छिपे छिपे औरङ्गजेब से जा मिले हैं, रविदत्त ने भी उन्हीं का साथ दिया है और उन्हीं की आज्ञानुसार ये लोग, (अर्थात् आप

लोग) भी भाग गये हैं। केवल इतना ही नहीं मालूम और भी क्या क्या बातें लोगों ने जड़ दी हैं जिससे वह जल भुन कर खाक हो रहा है। मैं भी उसकी तरफ से बेफिक्र नहीं था। मुझे भी उसके क्रोध का हाल तुरत ही मालूम हो गया और सुनने के साथ ही मैं इस तरफ रवाना हुआ॥

नौजवान०। तुमने बहुत अच्छा काम किया जो हम लोगों को इत्तला कर दी नहीं तो सड़क हो सड़क जाने से ताज्जुब नहीं कि पीछा करनेवाले हमलगों को पा लेते परन्तु अब आशा है कि हमलोगों का पता किसी को मालूम न हो और हमलोग हिफाजत के साथ अपने ठिकाने पर जा पहुंचे॥

प्रताप०। ठीक है, इसके अतिरिक्त कदाचित् कोई मिल भी गया तो शायद हमलोगों से लड़ने का साहस न करेगा, क्योंकि एक तो हमलोग पूरी हिफाजत के साथ हैं, दूसरे शाहजादा साहब (दाराशिकोह) के हुक्म की तामील भी पूरी२ नहीं होती॥

नौजवान०। हां सो तो जरूर है, क्योंकि बेचारे नौकरों को दोनों तरफ के हुक्म का खयाल रहता है, दाराशिकोह कुछ और ही हुक्म देता है और बादशाह सलामत गुप्तरीति से उसे कुछ और ही समझा देते हैं॥

प्रताप०। दाराशिकोह अपने तीनों भाइयों का नाम तक मिटाने के लिये तैयार है मगर बादशाह की मुहब्बत नहीं चाहती कि उसके चारों लड़कों में से एक भी मारा जाय। जसवन्तसिंह और कासिम खां का हाल तो आप को मालूम हुआ ही होगा जिन को दाराशिकोह ने औरङ्गजेब के मुकाबले में भेजा है॥

नौजवान०। हां सुना है कि बादशाह (शाहजहां) ने उन्हें

गुप्तरोति पर कह दिया था कि "जहां तक हो सके लड़ाई मत होने देना" ॥

प्रताप० । कासिम खां तो दाराशिकोह से रंज भो रखता है मगर हमलोगों को अफसोस इस बात का है कि हमारे उदय-सिंहजो को लोगों ने व्यर्थही बदनाम कर रक्खा है ॥

नौजवान० । हां यह तो बताओ कि हमलोगों के बारे में यह जो हुक्म हुआ है सो खास बादशाह का हुक्म है या दाराशिकोह का ?

प्रताव० । जहां तक मैं खयाल करता हूं यह हुक्म सिर्फ दाराशिकोह को तरफ से है, बादशाह वेचारे को तो इन सब बातों को कुछ खबर भी न होगी, वह तो आज कल एक प्रकार का कैदो हो रहा है ॥

इसी प्रकार की बातें करते वे दोनों आदमी पालकी के साथ साथ जा रहे थे। सवारी खेतही खेत जा रही थो और रास्ता बहुत ही खराब तथा ऊंचा नीचा था इसलिये वे लोग बड़ी मुश्किल से सफर ते कर रहे थे हां चांदनी रात का इन लोगों को बहुत कुछ सहारा था। इसी तरह पहर भर तक बराबर चले जाने के बाद कहांरो ने कुछ देर तक दम लेने के लिये पालकी जमीन पर रख दी और इसी वजह से सवारों ने भी नौजवान को आज्ञानुसार थोड़ी देर के लिये घोड़े की पीठ खाली की। नौजवान भी घोड़े से नीचे उतर पड़ा और प्रताप से कुछ कह कर पालकी के पास आया और एक तरफ (जिधर निराला था) का पर्दा कुछ उठा कर पूछा "किसी चीज की जरूरत तो नहीं है ?"

औरत०। नहीं, मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है मगर यह तो बताओ कि अब रात कितनी बाकी होगी ?

नौजवान०। रात तो अभी दो घंटे से कुछ ज्यादेही होगी॥

औरत०। किसी तरह से सवेरा हो तो डाकुओं का खौफ दिल से निकले॥

नौजवान०। मुझे तो अब डाकुओं का कोई खयाल नहीं रहा और बादशाह का भी कुछ ऐसा खयाल नहीं है क्योंकि हम लोग सड़क छोड़ कर बहुत दूर हट आए हैं इसके अतिरिक्त मालूम होता है कि यहां पासही में कोई गांव भी है॥

औरत०। (कुछ खुश होकर) क्या कोई गांव मालूम पड़ता है?

नौजवान०। हां, कुछ ऐसाही नजर आती है॥

औरत०। तो फिर यहां क्यों ठहर गये उसी गांव में चले चलना था॥

नौजवान०। गांव का पता लगाने के लिये मैंने प्रताप को भेजा है, वह लौट कर आ जाय और निश्चय हो जाय कि पास में कोई गांव है तो अवश्य वहां चल कर ठहरेंगे॥

इसके बाद उन दोनों में कुछ देर तक बातचीत होती रही और तब तक प्रताप भी लौट कर आ गया, नौजवान ने प्रताप के पास जाकर पूछा "क्यों क्या खबर है?"

प्रताप०। यहां से थोड़ी ही दूर पर बहुत बड़ा गांव है और उसके किनारेही पर बहुत बड़ा शिवालय और सुन्दर पक्का कूंआ है। शिवालय में हमलोगों के रहने लायक जगह भी काफी है॥

नौजवान०। तो बस अब देर करने की कोई ज़रूरत नहीं, सवारी उठवाओ और उसी जगह चले चलो॥

तुरत सवारी (पालकी) उठवाई गई और घड़ी भर के अन्दरही सब कोई उस शिवालय के दर्वाजे पर जा पहुंचे॥

अभी वह जमाना नहीं आया था कि औरङ्गजेब के हाथों से बड़े २ शिवालय और मन्दिर मटियामेट हो जाते। अभी तक भारतवर्ष के हर एक हिस्से में जगह २ हिन्दुओं के आराम और उपासना का स्थान मिल सकता था। इसी लिये यह मन्दिर भी यद्यपि एक मामूली गांव वालों की भक्ति और श्रद्धा का नमूना था तथापि इस योग्य था कि आए गए सौ पचास परदेसियों को आराम पहुंचाता। इसके चारों तरफ एक मंजिल की और सामने फाटक के ऊपर दो मंजिल की पक्की इमारत बनी हुई थी जिसमें अमीर और गरीब हर तरह के मुसाफिर आराम पा सकते थे। इस समय उसमें बाहर से आए हुए केवल दस बारह मुसाफिर उतरे हुए थे मगर फाटक के ऊपर वाला कमरा बिल्कुल खाली था। इन सभों के वहां पहुंचने पर महन्थ ने दर्वाजा खुलवा दिया और कह दिया कि जहां तुम लोगों को आराम मिले डेरा डालो और जिस चीज की जरूरत या कमी हो मुझ से बेखटके मांग लो और उसे ठाकुरजी का प्रसाद समझो॥

महन्थ की यह असाधारण कृपा कुछ इन्हीं लोगों के लिये न थी बल्कि जितने मुसाफिर उसमें आया करते सभों के साथ ऐसाही बर्ताव होता क्योंकि जिस गांव में यह मन्दिर या शिवाला था उस गांव की आमदनी (मालिकों की तरफ से) इसी मंदिर में इसी काम के लिये लगी हुई थी?

हमारे इन अनोखे मुसाफिरों ने जिस समय मन्दिर में डेरा डाला उस समय रात बहुत कम बाकी थी। पालकी में जो

औरत सवार थी उसका डेरा फाटक के ऊपर वाले कमरे में पड़ा और उसी के दर्वाजे वाली एक कोठड़ी में नौजवान तथा प्रताप ने डेरा जमाया, बाकी लोगों ने उनकी आज्ञानुसार इधर उधर रहने का बन्दोबस्त कर लिया। इन सभों का यह इरादा हो चुका था कि "आज का दिन इसी मन्दिर में बिता कर सन्ध्या होते ही यहां से रवाना हो जायँगे॥

सवेरा होने के साथ ही वे सब मुसाफिर अपनी अपनी मंजिल को रवाना हो गये जो इन लोगों के आने से पहिले ही उस मंदिर में टिके हुए थे। हमारे मुसाफिरों ने भी स्नान पूजा से छुट्टी पाई, मौका और आड़ का बन्दोबस्त हो जाने पर वह औरत जो पालकी पर सवार होकर यहां आई थी, नौजवान को साथ लेकर ठाकुरजी का दर्शन करने गई॥

वास्तव में इस एक मन्दिर के अन्दर दो मन्दिर थे, एक में शिव पंचानन की मूर्ति थी और दूसरे में श्रीराम पञ्चायतन विराजमान थे। जिस समय वह औरत दर्शन करने गई उस समय महन्थ शिवजी की आरती कर रहा था, आरती करके जब वह घूमा तब इस औरत पर महन्थ की निगाह और महन्थ पर इस औरत की निगाह जा पड़ी, दोनों ने एक दूसरे को ताज्जुब के साथ देखा। और बदहवास होकर पीछे की तरफ हट गई, उस का चेहरा जर्द पड़ गया और तमाम बदन थर थर कांपने लगा। महन्थ भी ऐसा घबराया कि यदि वह जल्दी के साथ आरती जमीन पर न रख देता तो निःसन्देह वह उसके हाथ से छूट कर जमीन पर गिर पड़ती, तिसपर भी महन्थ अपने को अच्छी तरह सम्हाल न सका, और पूजा का कुछ हिस्सा अधूरा

ही छोड़ मन्दिर के बाहर निकल कर अपनी कोठड़ी में चला गया॥

इन दोनों को विचित्र हालत देख कर नौजवान को भी हद्द से ज्यादे ताज्जुब हुआ। यह तो उसे निश्चय हो गया कि इन दोनों की देखा देखी या विचित्र अवस्था के साथ प्रेम का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, मगर जो कुछ है वह क्या है? इसका पता लगाना चाहिये॥

दर्शन करने के वाद जब वे दोनों अपने डेरे पर आए तब भी नौजवान ने उस औरत को घबराहट औरपरेशानी से खाली नहीं पाया, हां यह जरूर मालूम होता था कि वह औरत अपनी अवस्था ठीक करने की चेष्टा कर रही है, अस्तु थोड़ी ही देर में उसकी अवस्था ठीक हो गई और तब नौजवान ने उससे पूछा "जैसा कि पहिले निश्चय हो चुका है, दिन भर यहां रहने का इरादा है या नहीं? अगर यहां से इसी समय रवाना हो जाने की इच्छा हो तो कहो तैयारी की जाय॥

औरत०। यह तो निश्चय होही चुका है कि आज दिन भर यहां रह कर सन्ध्या के समय रवाना होंगे फिर पुनः पूछने का क्या सबब है? अभी तो किसी के खाने पीने का भी कुछ बन्दोबस्त नहीं हुआ है॥

नौजवान०। मेरे पुनः पूछने का सबब यही है कि यहां से महन्थ को देख कर तुम कुछ घबरा या डर गई थीं, इसी लिये मुझे शक हुआ कि कहीं उस महन्थ ने तुम्हें पहिचान तो नहीं लिया? या उससे तुम्हें किसी तरह का खौफ तो नहीं है?

औरत०। नहीं उससे मुझे किसी तरह का खौफ नहीं है॥

नौजवान० । फिर तुम उसे देख कर डरी क्यों ?

औरत० । (कुछ सोच कर) तुमने उसके चेहरे पर भी तो उस समय, ध्यान दिया होगा ॥

नौजवान० । हां, वहतो तुमसे भी ज्यादे डरा और घबड़ाया हुआ मालूम पड़ता था! आखिर इसका कुछ सबब तो जरूर होगा॥

औरत० । इसका सबब थोड़ीही देर में आप से आप तुम्हें मालूम हो जायगा मगर.........

इतना कहने के साथही वह कुछ सोचने लगी और बाहर से प्रताप के बुलाने की आवाज आई (नौजवान बाहर चला गया और थोड़ीही देर के बाद वापस आकर उस औरत से बोला "मन्मथ तुमसे मिलने के लिये आया है। प्रताप ने उससे कहा भी था कि 'तुम अन्दर कैसे जा सकोगी?' इसके जवाब में उसने कहा कि "जा सकोंगी और जायँगी तुम इत्तला करो" ॥

यह संदेसा सुन कर फिर उस औरत की वही दशा हो गई, चेहरे पर घबराहट की निशानी दिखाई देने लगी और वह उठ कर बिना कुछ जवाब दिये इधर उधर टहलने लगी ॥

आठवां बयान।

हाथ में नंगी तलवारें लिये हुए जिन लोगों को खंडहर के अन्दर आते हुए उदयसिंह और रविदत्त ने देखा, ये लोग असल में दाराशिकोह की फौज के सिपाही थे और गिनती में दस थे। उन्हें खंडहर के अन्दर इस ढंग से आते देख रविदत्त और उदयसिंह भी तलवार लेकर खड़े हो गये मगर तुरतही मालूम हो गया कि वे लोग इन दोनों से लड़ने की नीयत नहीं रखते तथापि उन सभों में से एक ने आगे बढ़के उदयसिंह से पूछा "क्या आप दोनों आदमी कृपा करके अपना नाम बता सकते हैं?"

उदय०। मेरा नाम कृष्णसिंह है और (रविदत्त की तरफ बता के) इनका नाम भानुदत्त है॥

सिपाही०। क्या आप लोगों ने इस जंगल में उदयसिंह को देखा है? या उन्हें जानते हैं?

उदय०। हां मैं उदयसिंह को जानता तो हूं मगर आप लोगों को उनसे क्या काम है?

सिपाही०। मैं उनके नाम की एक चीठी लाया हूं॥

उदय०। वह चीठी किसकी लिखी हुई है?

सिपाही०। इसका जवाब मैं तब तक नहीं दे सकता जब तक मुझे यह न मालूम हो जाय कि आप को उदयसिंह से कोई सम्बन्ध है या नहीं, अगर है तो क्या?

उदय०। अस्तु इसी तरह मुझे भी मालूम हो जाना चाहिये कि आप लोग उदयसिंह के विपची हैं या.........

सिपाही०। क्या आप इतना नहीं सोचते कि अगर हमलोग उनके दुश्मन होते तो उनके नाम की चीठी लाते?

उदय० । दुश्मन के नाम की चीठी या हुक्मनामा लाना क्या कोई पाप है ? खैर तुम लोग अगर हमारे दुश्मन भी होवो तो हम कुछ परवाह न कर के साफ २ कह देते हैं कि 'उदयसिंह' मेराही नाम है ॥

सिपाही०। (सलाम करके) मगर हमारे मालिक की यही आज्ञा है कि "तुम किसी की बात पर विश्वास न करना और उदयसिंह का परिचय लेकर तब पत्र देना" परिचय में उन्हों ने "भामा" का शब्द कहा था ॥

उदय०। (प्रसन्न हो कर) अच्छा तो मेरी तरफ से "पूर्ण" शब्द उसके उत्तर में समझ लो और अब चाहे अपने मालिक का नाम बताओ या न बताओ मगर मुझे मालूम हो गया कि तुम लोगों को जसवन्तसिंह जी ने भेजा है ॥

सिपाही०। (पुन: सलाम करके और एक पत्र उनकी तरफ बढ़ा के) निसन्देह ऐसाही है अस्तु यह पत्र लीजिये और इसका उत्तर शीघ्रही दीजिये ॥

उदयसिंह ने सिपाही के हाथ से पत्र लिया और खोल कर पढ़ा। पढ़ने के साथही भृकुटी चढ़ गई, आंखों में अन्दाज से ज्यादे सुर्खी दिखाई देने लगी और होठों की फड़कन ने साफ बता दिया कि उदयसिंह इस समय क्रोध के वश में हो रहे हैं। पत्र पढ़ कर उदयसिंह ने रविदत्त के हाथ में दिया और उसे पढ़ने के बाद रविदत्त को भी वही अवस्था हुई ॥

उदय० । (सिपाही से) कोई चिन्ता नहीं, परन्तु पत्र का उत्तर कैसे दिया जाय ? क्योंकि हम लोगों के पास लिखने का कोई सामान नहीं है ॥

सिपाही०। मैं कलम दावात और कागज अपने साथ लाया हूं॥

यह कह कर सिपाही ने कलम दावात और कागज उदयसिंह के सामने रख दिया और उन्होंने उस पत्र का जवाब लिख कर सिपाही के हवाले किया और इसके बाद वह पत्र जो सिपाही लाया था फाड़ कर फेंक दिया। सिपाहियों ने जंगल का रास्ता लिया और रविदत्त तथा उदयसिंह में बातें होने लगीं॥

नौवां बयान।

सूर्य्य भगवान अस्त हो चुके हैं और पलपल में बढ़नेवाली अन्धियारी चारो तरफ अपना दखल जमा रही है उदयसिंह और रविदत्त भेष बदले हुए औरङ्गजेब के लश्कर में घूम रहे हैं। इस समय उन दोनों के बदन में जो पोशाक है उसके विषय में इतना तो कह सकते हैं कि इसके पहिले जब इन दोनों को हमने देखा था तब उनके पास इन कपड़ों का नामोनिशान भी न था मगर यह नहीं कह सकते कि ये कपड़ इन दोनों को कब, कहां से और क्योंकर मिले। दोनों की पोशाक सादी और सिपाहियाना ढंग की थी और हर्बों की किस्म में से केवल ढाल तलवार उनके पास थी और वे दोनों बड़ी वेफिक्री के साथ सैर करते हुए उस तरफ जा रहे थे जिधर सर्दारों के बड़े बड़े खेमे खड़े थे और आशा करते थे कि भरथसिंह का खेमा भी उसी तरफ होगा॥

थोड़ी ही देर बाद उन दोनों को मालूम हो गया कि यद्यपि यहां किसी ने किसी तरह की रोकटोक नहीं की मगर दो तीन आदमी गुप्त रीति से उनका पीछा किये हुए हैं अस्तु वे दोनों भी

रुके और लौट कर उन्हीं लोगों से रविदत्त ने पूछा कि भरथसिंह का डेरा कहां है ?

एक०। आप कहां के रहने वाले हैं और भरतसिंह को क्यों खोजते हैं ?

रवि०। उनसे मिलने की जरूरत है॥

वही०। क्या आप लोग अपना नाम बता सकते हैं ?

रवि०। हां हां, (उदयसिंह की तरफ बता कर) इनका नाम 'रामसिंह' है॥

रामसिंह नाम सुनते ही उसने झुक कर सलाम किया और कहा "आप मेरे साथ साथ चले आवें मैं आपको भरतसिंह जी के पास ले चलता हूं। उदयसिंह और रविदत्त उसके पीछे पीछे रवाना हुए और चक्कर देते हुए थोड़ी ही देर में भरतसिंह के खेमे के दर्वाजे पर पहुंचे। उसी आदमी ने अंदर जाकर भरथसिंह को इत्तला दी और वह स्वयं आ कर बड़ी खातिर से उन दोनों को खेमे के अन्दर ले गये और इसके बाद वह आदमी भी किसी तरफ चला गया जिसके साथ ये दोनों यहां तक आये थे॥

खेमे के अन्दर बिल्कुल सन्नाटा था, अर्थात् सिवाय भरथ-सिंह के कोई दूसरा आदमी वहां न था। जमीन वहां की सिर्फ एक दरी से ढकी हुई थी और पिछले भाग में एक छोटा सा फर्श बिछा हुआ था। इधर उधर बहुत से हर्वे पड़े हुए थे और फर्श के पास छोटीसी चौकी पर बहुत से लिखे और सादे कागज तथा लिखने का सामान भी मौजूद था॥

भरथसिंह ने दोनों को अपने पासही फर्श पर बैठाया और यों बातचीत होने लगी—

भरथ०। (रविदत्त की तरफ बता कर) इनका नाम शायद "रविदत्त" है ॥

उदय०। जी हां, ॥

भरथ०। मैं कल तक आपके आने का इरादा करके नाउम्मोद हो चुका था ॥

उदय०। ठीक है, मगर मैं कई ऐसी आफतों में फँस गया कि आ न सका। बताइये उस औरत का क्या हाल है?

भरथ०। बुरा हाल है ॥

उदय०। वह है किस जगह पर?

भरथ०। खास औरंगजेब के खेमे की बगल ही में छोटे से खेमे के अन्दर ॥

उदय०। उसके चारो तरफ सख्त पहरा पड़ता होगा?

भरथ०। बेशक ॥

उदय०। क्या आप बता सकते हैं कि वह कहां की रहने वाली है और उसका नाम क्या है?

भरथ०। (मुसकुरा कर) क्या वास्तव में आप उसे नहीं जानते?

उदय०। बिल्कुल नहीं ॥

भरथ०। उसने तो आपही का नाम लेकर औरंगजेब के गुस्से को बढ़ा दिया था ॥

उदय०। (ताज्जुब से) मेरा नाम ले कर!

भरथ०। जी हां, और इसी से मैं समझता था कि आप उसे जरूर जानते होंगे ॥

उदय० जी नहीं, मैं उसे बिल्कुल नहीं जानता, केवल आप

की आज्ञानुसार यहां आया हूं और अब जिस तरह आप कहें उसकी मदद करने के लिये तैयार हूं॥

भरथ०। शायद ऐसाही हो, अस्तु मुझे किसी तरह का वास्ता न होने पर भी उस पर दया आती है और उसे इस आफत से छुड़ाने की फिक्र में हूं॥

उदय०। आपके बादशाह ने उसे कैद क्यों कर रक्खा है?

भरथ०। केवल मुराद बख्स की प्रसन्नता के लिये। एक तो वह पहिले ही ऐयाशी के नशे में चूर हो रहा था दूसरे औरंगजेब 'दिन दूनी रात चौगुनी' उसकी ऐयाशी को तरक्की दे रहा है, सच तो यों है कि खासा शाह साहब बन कर लोगों को धोखा देने वाले औरंगजेब की चालाकियों का कुछ पता नहीं लगता और इसका भी भेद नहीं खुलता कि इस बेचारी औरत को मुराद की नजर करने में औरंगजेब ने क्या फायदा सोचा है। इसके अतिरिक्त कल तक तो मुझे यह भी आशा थी कि इस होने वाली घमासान लड़ाई का मौका उस औरत को छुड़ा देने के लिये बहुत ही अच्छा होगा मगर आज उसकी आशा जाती रही क्योंकि इस लड़ाई में औरंगजेब फतह पावेगा यह निश्चय हो गया है॥

उदय०। (बात काट कर) सो कैसे?

भरथ०। (धीरे से) दाराशिकोह की फौज का अफसर कासिमखां मिला लिया गया और वह दाराशिकोह से कुछ रंज भी था, मगर बादशाह (शाहजहां) की आज्ञापालन करने के लिये चला आया है॥

उदय०। ठीक है मगर उस फौज का दूसरा अफसर जसवन्त-

सिंह ऐसा नहीं है जो अपने धर्म्म में वट्टा लगा कर औरंगजेब से मिल जाय॥

भरथ०। बेशक ऐसा ही है मगर जब उसका साथी ही बे-ईमान हो रहा है तब वह क्या स्वयं धोखे मे नहीं पड़ सकता?

उदय०। अस्तु जो हो आखिर आपने उसके छुड़ाने के लिये कोई तदवीर तो सोची ही होगी॥

भरथ०। हां,......

भरथसिंह और कुछ कहा ही चाहता था कि उसका एक खैरखाह सिपाही खेमे के अन्दर आता हुआ दिखाई दिया, जिसपर निगाह पड़ते ही भरतसिंह ने चौंककर पूछा "क्यों कुशल तो है"?

सिपाही०। मैं ठीक नहीं कह सकता कि कुशल है या नहीं, मगर इस कुसमय की बुलाहट का कुछ न कुछ सबब तो जरूर है॥

भरत०। क्या बादशाह ने मुझे तलब किया है?

सिपाही०। केवल आप ही को नहीं बल्कि (उदय की त-रफ बता कर) इनको भी तलब किया है॥

भरथ०। (ताज्जुब से!) इनसे क्या मतलब था?

सिपाही०। सो ईश्वर जाने। यदि आज्ञा हो तो उस चोब-दार को हाजिर करूं जो तलबी का परवाना बन कर आया है॥

भरथ०। (कुछ सोच कर) खैर उसे मेरे पास भेजो॥

इतना सुन कर वह सिपाही खेमे के बाहर चला गया और थोड़ी ही देर बाद बादशाही चोबदार को साथ लिये हुए पुनः खेमे के अन्दर आया। चोबदार ने भरतसिंह को एक मामूली सलाम करके कहा "खुदवदौलत (औरंगजेब) ने आपको तलब

फर्माया है और यह भी हुक्म दिया है कि आप अपने नये मेहमान को भी जिसने अपना नाम रामसिंह बताया है साथ लेते आवें ॥"

भरथ० । बहुत अच्छा, मैं बहुत जल्द हाजिर होता हूं ॥

सिपाही० । मुझे अपने साथ लाने के लिये हुक्म हुआ है, खैर कोई हर्ज नहीं मैं तब तक बाहर खड़ा हूं आप बातें करलें॥

इतना कह कर चोबदार बाहर चला गया और भरतसिंह ने उदयसिंह की तरफ देख के कहा "यह बहुत ही बुरा हुआ ! मैं नहीं जानता कि औरंगजेब को आप लोगों के बारे में किस तरह का शक हुआ है । (कुछ रुक कर और किसी तरह की आहट पा कर) देखिये मालूम होता है कि बहुत से फौजी सिपाहियों ने हमारा खेमा घेर लिया है" ॥

दसवां बयान।

महन्थ के आने की खबर सुन कर उस औरतका पुनः उसी तरह घबरा जाना और बिना कुछ जवाब दिये उठ कर इधर उधर घूमना और अपनी तबीयत को सम्हालने की कोशिश करना नौजवान को ताज्जुब में डालने के लिये मामूली बात न थी, अस्तु उसने रुकती हुई आवाज में पुनः उस औरत से कहा "यदि कहो तो महन्थ को साफ २ जवाब दे दिया जाय और कह दिया जाय कि पुनः मुलाकात नहीं हो सकती। उसकी मजाल नहीं कि बिना हमारी आज्ञा चौकठ के अन्दर पैर रख सके"॥

औरत०। नहीं नहीं, अगर वह आगया है तो उसको रोकना मुनासिब न होगा।

नौजवान०। और शायद उससे किसी किस्म के पर्दे की भी जरूरत न होगी॥

औरत०। ठीक है पर्दे की भी कोई जरूरत नहीं है। तुम उसे अपने साथ लिवा लाओ मगर इस बात का ख्याल रखना कि वह अपने साथ किसी तरह का हर्बा न लाने पावे और जब तक वह मेरे पास बैठा रहे तुम भी मेरे पास हिफाजत के लिये मौजूद रहो॥

नौजवान०। जब तुम्हारे दिल में उसका इतना बड़ा डर बना हुआ है तो उसे अपने पास लाने के लिये क्यों कहती हो?

औरत०। अफसोस है कि मैं मिलने से इन्कार नहीं कर सकती साथही इसके जितना मैं उससे डरती हूं उतना ही वहभी मुझसे डरता है। खैर! तुम उसे यहां तक लाओ तो सही॥

औरत की बातों ने नौजवान के ताज्जुब को और भी बढ़ा दिया, तरह २ की बातें सोचता हुआ वह कमरे के बाहर आया

और जब महंथ के पास पहुंचा तो उसे भी तरद्दुद घबराहट और परेशानी के साथ टहलते हुए पाया। नौजवान ने महंथ से पूछा कि आप क्या चाहते हैं? इसके जवाब में महंथ ने कहा कि मैं उस औरत से मिला चाहता हूं जिसके साथ आप आये हैं॥

नौजवान०। क्या आप बता सकते हैं कि आप को उनसे मिलने की जरूरत क्यों पड़ी?

महंथ०। अफसोस है कि मैं इसका सबब बयान नहीं कर सकता॥

नौजवान०। अच्छा तो मैं आपको अपने साथ उनके पास ले चलता हूं मगर आपको इस बात की तलाशी दे देनी होगी कि आपके पास किसी तरह का हर्बा नहीं है॥

महंथ०। हां आपको मैं तलाशी लेलेने का अख्तियार देता हूं और अपने हाथ की यह छड़ी भी बाहर ही रख देता हूं॥

नौजवान०। अच्छी बात है, मैं आपको ले चलने के लिये भी तैयार हूं॥

इतना कह नौजवान ने महंथ की तलाशी लेकर अपनी दिलजमई कर ली और उसे अपने साथ लिये हुए उस औरत के पास चला आया। औरत ने जो एक छोटी सी दरी पर बैठी हुई थी अपने से थोड़ी दूर पर बिछे हुए एक कम्बल की तरफ इशारा करके महंथ को बैठने के लिये कहा और महंथ भी बिना कुछ कहे उस कम्बल पर बैठ गया॥

औरत०। (महंथ से) कहिये आप मुझसे क्या कहा चाहते हैं?

महंथ०। मैं जो कुछ कहा चाहता हूं वह ऐसी बात नहीं है कि कोई तीसरा सुन सके॥

औरत०। (नौजवान की तरफ इशारा करके) मैं इस समय

इनकी हिफाजत में हूं, इन्हें मुझे अकेला छोड़ने न छोड़ने का अख़्तियार है। अगर यह यहां से चले जायँ तो मुझे किसी तरह का उज्र नहीं हो सकता॥

महंथ०। (नौजवान से) क्या आप आधी घड़ी के लिये बाहर जा सकते हैं?

नौजवान०। हर्गिज नहीं! क्योंकि मुझमें बादशाह के हुक्म टालने की हिम्मत नहीं है॥

महंथ०। कौन बादशाह? शाहजहां या दाराशिकोह?

नौजवान०। मेरा मतलब शाहजहां से है॥

महंथ०। ठीक है, क्योंकि दाराशिकोह ने तो इनको गिरफ़्तारी का पर्वाना ही जारी किया है॥

नौजवान०। मुझे इस बात की खबर नहीं है कि गिरफ़्तारी का पर्वाना कब और क्यों जारी हुआ॥

महंथ०। ठीक है, मगर मैं समझता था कि प्रताप आपके पास यही खबर लेकर आया होगा क्योंकि जब आपलोग घर से चले हैं तो प्रताप आपके साथ में न था॥

नौजवान०। मैं नहीं जानता था कि आप इस मन्दिर की महन्थी करते हैं या दाराशिकोह की जासूसी!

इस बात का जवाब महंथ ने तो कुछ भी न दिया मगर उस औरत ने नौजवान की तरफ देखकर कहा "अगर इन्हों ने जासूसी का कोई काम किया तो यह कोई नई और ताज्जुब की बात नहीं है अगर ताज्जुब की कोई बात है तो यह है कि ये यहां के महंथ बने हुए दिखाई देते हैं। क्या आपको बड़ी शाहजादी माहबा का हाल मालूम नहीं! जब कि वह......

महंथ०। (औरत को बोलने से रोक कर) बस! बस! बस! मुझे यह आशा न थी कि तुम उन बातों का जिक्र किसी तीसरे के सामने छेड़ोगी!

औरत०। (कुछ क्रोध में आकर) मगर मैं लाचार हूं कि तुम अपना रोब जमाने के लिये एक अनूठे ही ढंग पर चल रहो हो और दाराशिकोह के नाम की धमकी दिया चाहते हो॥

महंथ०। तो क्या मैंने कुछ झूठ कहा था?

औरत०। मेरी भी तो सुन लेते कि मैं झूठ कहती हूं या सच॥

महंथ०। मगर मेरे कहने का मतलब किसी भेद खोलने से न था॥

औरत०। मगर था तो केवल धमकाने का!

महंथ०। शायद तुम नहीं जानती थीं कि यहां मैं कितने आदमियों पर हुकूमत कर रहा हूं॥

औरत०। इसके जानने की मुझे कोई जरूरत भी नहीं है क्योंकि तुम्हारी हुकूमत का झंडा बात की बात में गिरा देनेवाला वह औजार अभी तक मेरे पास मौजूद है जिसे लोग तस्वीर के नाम से भी पुकार सकते हैं और जिस पर बादशाह की मोहर भी मौजूद है। अभी थोड़ी देर हुई है जब मैंने कई बातें समझा कर वह लिफाफा प्रताप के हाथ में दे दिया है॥

महंथ०। (कुछ डरी हुई आवाज से) खैर! अब मालूम हुआ कि तुम यहां तक मेरा बन्दोबस्त कर चुकी हो और प्रताप को भी इस भेद में शरीक कर चुकी हो। मगर याद रहे कि महंथ की चाबुक सवारी भी कोई मामूली बात नहीं है, जैसा रास्ता तुम पकड़ोगी वैसी ही चाल मुझे भी चलनी पड़ेगी॥

औरत०।इस बात का खयाल तो दोनों ही तरफ होनाचाहिये॥

महंथ०। अब तो मैं भी पूछ सकता हूं कि पहिले कार्रवाई किस तरफ से शुरू हुई?

औरत०। कार्रवाई नहीं, इसे बचाव का ढंग कहिये॥

महन्थ०। खैर, तो अब मैं कह देता हूं कि इन सब बात की कोई जरूरत नहीं जब तक तुम्हारी इच्छा हो यहां रह और जब इच्छा हो चली जाओ और मेरी तरफ से किसी बात का खयाल न करो॥

औरत०। तुम्हारी बातों पर विश्वास करना मुझे पसंद नहीं अब अगर कुछ पसन्द है तो यही कि इसी समय मैं यहां से कूच कर जाऊं और जब तक सूर्य अस्त न हो तुम्हें भी अपनी पालकी के संग दौड़ाऊँ और सन्ध्या हो जाने पर कहूं कि अब तुम अपने मन्दिर की तरफ लौट जाओ॥

महन्थ०। (कांप कर) नहीं, नहीं, ऐसा खयाल भी अपने दिल में न लाना, इसमें मेरी बड़ी बेइज्जती होगी॥

औरत०। आखिर मैं कर ही क्या सक्ता हूं, तुम्हारी चालबाजियों ने मुझे इस लायक नहीं रक्खा कि मैं तुम्हारी बातों पर भरोसा करूं॥

महन्थ०। अगर ऐसा करोगी तो लाचार हो कर तुम्हारी गिरफ़ारी का हुक्म देना पड़ेगा॥

औरत०। कोई चिन्ता नहीं, मगर समझे रहना कि उसके बदले में तुम्हारे लिये भी फांसी का हुक्म मौजूद है और साथही इसके यह भी खयाल रखना कि मुझे अपनी जान उतनी प्यारी नहीं है जितनी तुम्हें तुम्हारी॥

महन्थ०। (गुस्से से) तुम बातही बात में बहुत बढ़ी जारही हो और इस बात को भूल रही हो कि मैं कौन हूं॥

औरत०। अगर इस बात का शक हो कि मैं तुम्हें भूल गई, तो कहो मैं तुम्हारी पिछली बातें याद दिलाऊं ॥

महन्थ० । तो क्या में ऐसा नहीं कर सकता ?

औरत०। खैरतो जो तुमसे बने तुम करना और जो मुझसे हो सकेगा मैं करूंगी, समझ लूंगी कि मेरा सफर यहीं तक पूरा होगया॥

महन्थ०। फिर इससे सिवाय नुकसान के फायदाहो क्या है ?

औरत०। अगर मुझे नहीं तो (नौजवान की तरफ बताकर) इन्हें फायदा जरूर होगा और सच तो यों है कि प्रताप भी अपनी मां के ऋण से उऋण हो जायगा ॥

महन्थ०। (घबरहट के साथही साथ झुंझला कर) फिर तुम उसी पथ पर चलने लगीं ?

औरत० । लाचारी है, इसके सिवाय बचाव के लिये और कर ही क्या सकती हूं ॥

महन्थ० । तो तुम्हें नुकसानही कौन पहुंचा रहा है ?

औरत० । आखिर तुम क्या ठाकुर जी को प्रसादी लेकर मेरे पास आये हो ?

महन्थ०। (अपने क्रोध को रोक कर) अच्छा तो मैं जाता हूं॥

औरत० । जाओ मगर इस बात को याद रक्खो कि आधे घंटे के अन्दर हो तुम्हें मेरे साथ चलने के लिये तैयार हो जाना पड़ेगा, में वादा करती हूं कि सूर्य अस्त होने के घंटे भर पहिले हो तुम्हें यहां लौट आने के लिये छोड़ दूंगी ॥

महन्थ० । ऐसा तो नहीं हो सकता ॥

औरत० । होगा और ऐसा ही होगा ॥

महन्थ० । (क्रोध से दांत पीस कर) तो क्या मुझे जसवंत-

सिंह को भतीजी के लिये तामदान की सवारी का बन्दोबस्त करना ही पड़ेगा? और क्या पुनः उदयपूर जाने की नौबत आवेगी?

महंथ की यह आखरी बात सुन कर उस औरत का चेहरा मारे क्रोध के लाल हो गया और उसके नाज़ुक होंठ कांपने और दांतों के नीचे जाने लगी। उसने जमीन पर पैर पटक के कहा "आखिर यह क्या बात है? क्या तुम्हें अभी विश्वास नहीं हुआ कि आज मैं मरने के लिये तैयार हो चुकी हूं मगर एक सत्पुरुष के खानदान भर की आत्मा को दुखी न करूंगी"? इतना कह कर वह औरत उठी और उस तरफ बढ़ी जिधर उसका बिछावन और असबाब रक्खा हुआ था। जेवरों की एक छोटी सी सन्दूकड़ी लाल कपड़े में बंधी हुई उसी जगह रक्खी थी जिसे वह उठा लाई और नौजवान की तरफ बढ़ा कर तथा महंथ की तरफ देखती हुई बोली "अगर कुछ प्रताप के पास है तो कुछ इसमें भी है"॥

अब महंथ अपने रंज को बर्दाश्त न कर सका, घबराहट के साथ उठ खड़ा हुआ और उस औरत की तरफ देखता हुआ बोला "अच्छा अच्छा, मै तुम्हारे साथ जहां तक कहो चलने के लिये तैयार हूं, इन गड़े मुर्दों को उखाड़ने से फायदा ही क्या है?

औरत०। मुझे ऐसा करने को कोई जरूरत नहीं है, अगर तुम चलने के लिये तैयार हो तो मैं भी यहां ठहरना पसंद नहीं करती। मेरे साथी लोग यहां नहीं तो आगे चल कर कुछ खा पी लेंगे॥

महन्थ०। मैं प्रसादी भेज देता हूं तुम खा पी कर निश्चिंत हो जाओ तब तक मैं भी भोजन कर लेता हूं॥

औरत०। ताने के तौर पर) जो अपनी प्रसादी आप उठा रखिये किसी बड़े खानदान के काम आवेगी॥

इस बात ने महंथ के बदन में पुनः कपकपी पैदा कर दी और वह खून भरी आंखों से उस औरत की तरफ देखता हुआ कमरे के बाहर निकल आया॥

इन दोनों की बातों ने हमारे नौजवान के दिल पर क्या असर किया सो वही जानता होगा मगर इतना जरूर है कि वह ताज्जुब के साथ उन दोनों की बातें सुनता और उस पर गौर करता रहा मगर असल तत्व कुछ समझ में न आया आदमी बुद्धिमान था इसलिये बेमौके कुछ बोलने या पूछने का इरादा भी न किया। जब महन्थ कमरे के बाहर चला गया और वह भी उसी सीढ़ियों तक पहुंचा आया तो उस औरत से बोला "मैं अफसोस करता हूं कि यहां आने के सबब तुम्हें एक तरह की तकलीफ उठानी पड़ी"॥

औरत०। कोई चिन्ता नहीं, बल्कि एक तौर पर अच्छा ही हुआ। हम दोनों की बातें सुन कर ताज्जुब करते होगे मगर निश्चय रक्खो कि मैं इन भेदों को तुमसे छिपा न रक्खूंगी क्योंकि इस भेद से और तुमसे तथा प्रताप से बहुत बड़ा सम्बन्ध है। अब तुम जहां तक जल्द हो सके कूच की तैयारी कर दो, महंथ अवश्य हम लोगों के साथ चलेगा और रास्ते में तुम्हें दिखाऊंगी कि यह एक मामूली आदमी नहीं है॥

नौजवान, बहुत अच्छा कह कर कमरे के बाहर हो गया और थोड़ीही देर में कूच का सामान ठीक कर दिया। दोपहर होने के पहिले ही इन लोगों का डेरा कूच हो गया और महंथ भी एक घोड़े पर सवार नौजवान के साथही साथ जाता हुआ दिखाई देने लगा॥